# APPENDICES

## APPENDIX A.1

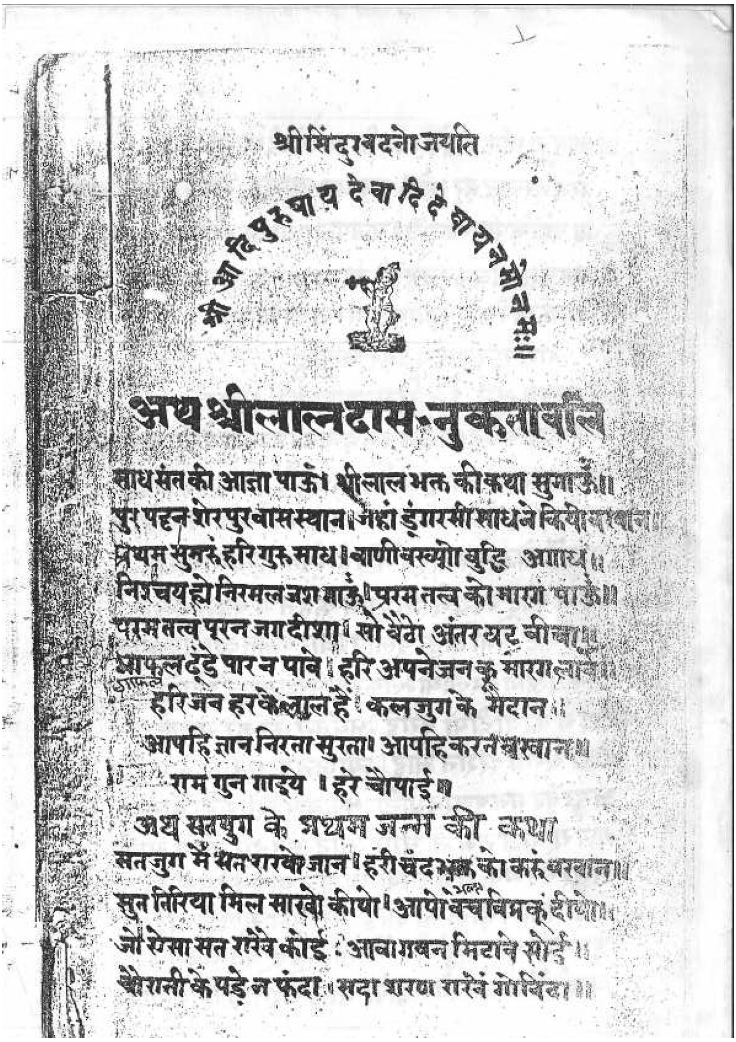

श्री सिंदुरवदनो जयति

श्री आदिपुरुषाय देवादिदेवाय नमो नमः॥

अथ श्रीलालदास-नुकलावलि

साध संत की आज्ञा पाऊं। श्रीलाल भक्त की कथा सुनाऊं॥
पुर पट्टन शेरपुर वासस्थान। जहां डूंगरसी साध ने कियो बखान॥
प्रथम सुमरूं हरि गुरु साध। वाणी बरन्यो बुद्धि अगाध॥
निश्चय ह्वै निरमल जश गाऊं। परम तत्व को मारग पाऊं॥
परम तत्व पूरन जग दीशा। सो बैठा अंतर घट बीसा॥
आफुल ढूंढे पार न पावे। हरि अपने जन कूं मारग लावे॥

हरि जन हर के लाल हैं। कलजुग के मैदान॥
आपहि ज्ञान निरता सुरता। आपहि करन बखान॥
राम गुन गाइये। हेर चौपाई॥

अथ सतयुग के प्रथम जन्म की कथा

सतजुग में सत राखो जान। हरीचंद भक्त को करूं बखान॥
सुत तिरिया मिल साखो कीयो। आपो बेच विप्र कूं दीयो॥
जो ऐसा सत राखे कोई। आवागवन मिटावे सोई॥
चौरासी के पड़े न फंदा। सदा शरण राखें गोविंद॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

जो आवे तो भक्ति बधावे । ताकी गत कोई बिरली पावे ॥

ऐसे हरचन्द हर भजे । तन धन त्यागरु गेह ॥

जा पहोंचे सतलोक में । पलपल अधिक स्नेह ॥

पलपल अधिक स्नेह हैं । कीरत अगम अनंत ॥

नौ क्रोड़ किये परायण । पांर ब्रह्म सुमरंत ॥

राम गुन गाइये । हरे चौपाई

## अथ दूसरां द्वितीय जन्म की कथा

त्रेता को सब कहूं बखान । प्रह्लाद पिता की तोड़ी कान ॥

निशवासर हरि का गुन गावे । आप कहे औरये कहलावे ॥

पिता रोस पुत्र पे आयो । राम कहन तू किने सिखायो ॥

पुत्र कहें दोऊ कर जोर । मैं नहीं पिता तुमारो चोर ॥

गांठ न कांट ग्रंथ न हरूं । राम कहत मैं काहू डरूं ॥

तब संकट संगी असुर बुलाये । चार कहत दश दौड़े आये ॥

भक्त बांध आगे धर लीयो । लेकर शैल शिखर चढ़ दीयो ॥

दरद न कीयो दीयो दुरगइ । अब तेरी को करै सहाई

दौडी धरनी दरशन आई । ज्यों जननी सुत कंठ लगाई ॥

असुर बैठ मन पथर बधायो । भक्त कूप दिये डारे पानी ॥

जल सू भीजे रूम न अंगा आद अंत हरि जन के संगा ॥

असुर बैठ एक मंत्र कीया । या पुत्र कछु काम न कीया ॥

दौड़ी वहाण होलका आई मेरी बात सुणोरे भाई ॥

पुत्र नहीं यह शत्रु तेरो मैं जो कहूं तू चेत सवेरो ॥

धरनी में एक बली गडावो तासु मेरो तन लिपटावो

जी० च०　　　　　　　　　　　　　　३

ओड़ पास ले काष्ट दीजे । ऊपर आय हुताशन दीजे ॥
भक्त बैठ दृढ़ आसन कीयो । पिंड मान ले हर कु दीयो ॥
जबै हुताशन लागी धाय । मानो भक्त मील जल न्हाय ॥
असुरन के मन भयो उदासा । संतन के मन भयो हुलासा ॥
तब तो असुर रिसायो गाढ़ो । दोऊ कर जोड़ खड़ग तब काढ़ो ॥
छांडो पिता राम मन मानो । कामन मो को कहा भुलानो ॥
झूठी बात कहा कहे होई । अब तोय आन छुड़ाव कोई ॥
मैं नहीं मान्ं भजुं भगवाना । जिन मोय दीनो पिंडर माना ॥
ज्यों जैसे जल में जगदीशा । तोय मोय खड़ग खंभ के बीचा ॥
चलो भान जब गिरवर जाई । रजनी उदो करती आई ॥
जन हेत प्रगटे आय । खंभ फाड़ नरसिंह हो धाय ॥
नखन धाय जब असुर पछाड़े । प्रहलाद भक्त के कारज सारे ॥
आय तिरे अरु पिता भी तारे । सात क्रोड़ नरक सु न्यारे ॥
सुरपत करे सकल के ईशा । ध्यान धरें जहां सुर तेतीसा ॥
ऐसी भक्ति प्रहलाद की । तन अन त्याग शरीर ॥
जहां जहां भीड़ पड़ी संतन में तहां पहोंचे रघुवीर ॥
रामगुन गाइये । हरे चौपाई ॥
द्वापर जग्य सेर सब काजा । पंडु भये युधिष्टर राजा ॥
सत के पूत धरम के नाती । जुग जुग भक्ति करी अति सांची ॥
द्वापर जग्य रची असमेधा । बेद उचार लिये बहु भेदा ॥
ध्वजा गाड़ जब भारत रोपो । असुर गर्व कर मन में कोपो ॥
ताती पौन लगन नहीं पाई । गोपाल जनन को भीड़ मिटाई ॥
काटे फंद मिटे संतापा । सदा सहाई गोविन्द आपा

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

४

निरभय राज कियो नोखंडा ॥ हर भक्तन के सदा अनंदा
सुकरत दान करे विधि पूजा ॥ हर दिन धावे और न दूजा
निश वासर सुमस्त सुख पाया ॥ आपहीं बी कलजुग की छाया
देहे विषाण सकल सहदेही ॥ जाय मिले जहां राम सनेही
देखत चरण रहे लिपटाय ॥ आनन्द मङ्गल उर न समाय
मांग मांग बोले भगवाना ॥ भक्त देख मोय बहुत कल्याना
आय नरक कू दरशन दीयो ॥ पांच क्रोड़ परायण कीयो
ऐसी भक्त युधिष्ठिर की ॥ निश वासर लौ लाय
आय तिरे जुग तारियो ॥ दिन दिन भक्त बंढाय
रामगुन गाइये ॥ हर चौपाई

## अथ चतुर्थी जन्म की कथा

अलख सुनो संतन निज भाका ॥ अब प्रगट कहूं लाल की साखा ॥
कलजुग घोर अंधेर सकल भो भीना ॥ विरला कोरे राम सू भीना ॥
माया देख फिरे तन फूला ॥ जन्म गंवाय रामगुन भूला ॥
भरम भुलाना पत्थर पूजे ॥ वा अंधे कू राम न सूझे ॥
मन में शोच किया तब हरी ॥ या कलजुग पे दया करी ॥
मैं हूं लाल तू मेरो दास ॥ निरगुण भक्ति करो प्रकाश ॥
निरंकार को सुमरण कीजो ॥ यही सीख साधुन कू दीजो ॥
निरदावा को उद्यम करियो ॥ दया भाव घट भीतर धरियो ॥
पर हक भीख धिये मन हाथा ॥ पर त्रिया कू जाणो माता ॥
अपणो हक जाण कर लीजो ॥ बित समान दान कछु दीजो ॥

कौल बोलदे लाल पठाये । कासि में हेलो दरा खंदाये ॥
भरत खंड जहां उत्तम ठाम । धोली दूब नाना को गांव ॥
पिता बसे सासरे सुख वास । जा घर जन्म लियो लालदास ॥
धन धन विधना सिरजनहार । धन वा कूंख औतरे आय ॥
धन धन घड़ी धन वह रैन । मात पिता सुख पायौ चैन ॥
चंदे कपाली हो निजदास । आ लीनो उदर में वास ॥
पिता चांदमल समदा माय । जिन की कूंख औतरे आय ॥
सदा सुचेत रहे दश मास । सतशील जहां देखो सांच ॥
तवे गर्भ सूं बाहर आये । जननी सूं सन्मुख बतलाये ॥
औंधा बासण सूधा कीया । दया करी जब सब भर दीया ॥
जोई कहे सो सांची होई । जाका मरम न जाने कोई ॥
मात पिता मन मांय विचारी । पुत्र नहीं कोई है औतारी ॥
मात पिता मन कीया सोच । देखत दरशा पाप गये मोच ॥
संवत पन्द्रहसे सत्तानवें । लाल लियो औतार ॥
हिन्दू तुरक बिच बैठ कर । होत भक्त परगास ॥
रामगुन गाइये हेरे चौपाई ॥
भोर भयो जब दाई आई । हाथ लगावत सुध बिसराई ॥
पांच बरस जब रहे अचेत । अपणे मन कूं सिख बुध देत ॥
कृपा करी जब दीन दयाला । दीनानाथ भये किरपाला ॥
चार मलायक बेग पठाये । उत्तम बन में खेलत पाये ॥
पल भारत होले पहोंचे आय । निरंकार के चरण दिखाये ॥
देखत चरण भयो उजास । दोऊ कर जोड करी अरदास ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

६

आधीन होबोले निजदास। मो जन कु राखो चरनन पास॥

जब हर अपने जन सु बोले। हर सुमेर ते दास अमोले॥

याकारज तुम बेग जावो। साध संत कु राह गहावो॥

जहां मेरो साध तहां में आऊं। पल २ में दीदार दिखाऊं॥

कौला बाह ले हरि को आये। साधन सुख आनंद हि पाये॥

कोई दिन बात गुप्त ही रही। ना किन बूझी ना उन कही॥

हर सुमरत नित भली बिहाई। सूखी लकड़ी बेची खाई॥

एक दिन मारग जोग जाई। मय मंता गज नाइ न चाई॥

मे मंता गज बहुत अलाम। करी सुंड सु तीन सलाम॥

हाथीवान उतर कर खेजो। नहना होय निरत कर बूझो॥

आपन कौन कहावों भाई। मैं तेरी गत कछु न पाई॥

जात कहन कु काहेय भेव। लकडी बेचे कोई लेव॥

नित अलवर गढ बेचण जाय। उद्यम कर के उदर भराये॥

बात कही कछु मन नहीं मानी। हाथीवान और बुध ठानी॥

बार बार मोहि मत बहकावो। राखो चरनन राह गहावो॥

केहें लाल तु सुणरे भाई। सांची बात न भावे काई॥

बात कहुं एक तोसु सांची। काई के मन आवे काची॥

तू पर त्रिया सु रहो लुभानो। साहब जाणे जग सु छानो॥

यह मारग तू छोडें भाई। तोसु राह कहुं समझाई॥

गुरु का शब्द सुनत भौ भागा। हाथीवान चरण उठ लागो॥

तजो कुटम अरु लोक बडाई। हाथीवान साध बुध पाई॥

साधु मिले सु अनत फल। जो मिल जाणे कोय॥

नुकता एक पहल का। कहें सु सें फल होय॥ ॥ ६॥

६

अर्थ नुकता द्वितीय

ऐसी करनी लालन करी। परमारथ कु देही धरी ॥
एक दिन अलवर गढ पे गये। धरा ध्यान निगंकां दी रहे ॥
भोर भयो जब लकडी बीनी। सूखी लेर इकट्ठी कीनी ॥
डलीएक जब चलो सकांलो। चिश्ती गजन तिजारे वालो ॥
लाल संग ले तभी चले। पैंडा ही में प्रीतम मिले ॥
दिव्य दृष्टि हो देख जोई। या की गत क्या जाने कोई ॥
शील वंत और सहज स्वभाव। सदा हाथ धरतीस पांव ॥
तन मन रहे सदा ही सांचा। सिर से चले भरोसा ऊंचा ॥
डलील खा एक भेद विचार। तुम साहब के खासा यार ॥ ४७
कहूं बात एक मेरी मानो। अपनी बात आपही जानो ॥
तुम से आप किया इतबार। फिरें मलायक तुमरी लार ॥
बात कही सो हिरदे आणी। लालन चार सुनाई बाणी ॥
या दुविधा को हर मोहि लागे। जैसे छाया धूप से भागे ॥
या दुनिया की राह अपूठी। साच कहूं कल माने झूठी ॥
अपने पाप आप ही जले। दलक देख कर गिला करे ॥
गदन कहे तुम डर मत मानो। दीन दुरस्त कर दुरमत भानो ॥
दुरमत कुतिया दूर उडाओ। हिन्दू तुरक कु राह मढावो ॥
हिन्दू तुरक का ऐसा हेत। जैसे धरा बिजरा खेत ॥
पैला खिद का यह जश लिय। साई कहे सोही कह दय ॥
इतनी बात गदन से भई। अलवर गढ के पास ॥
नुकता मानो दूसरा हांत भनि परगांस
राम गुन गोइय हर चोपाई

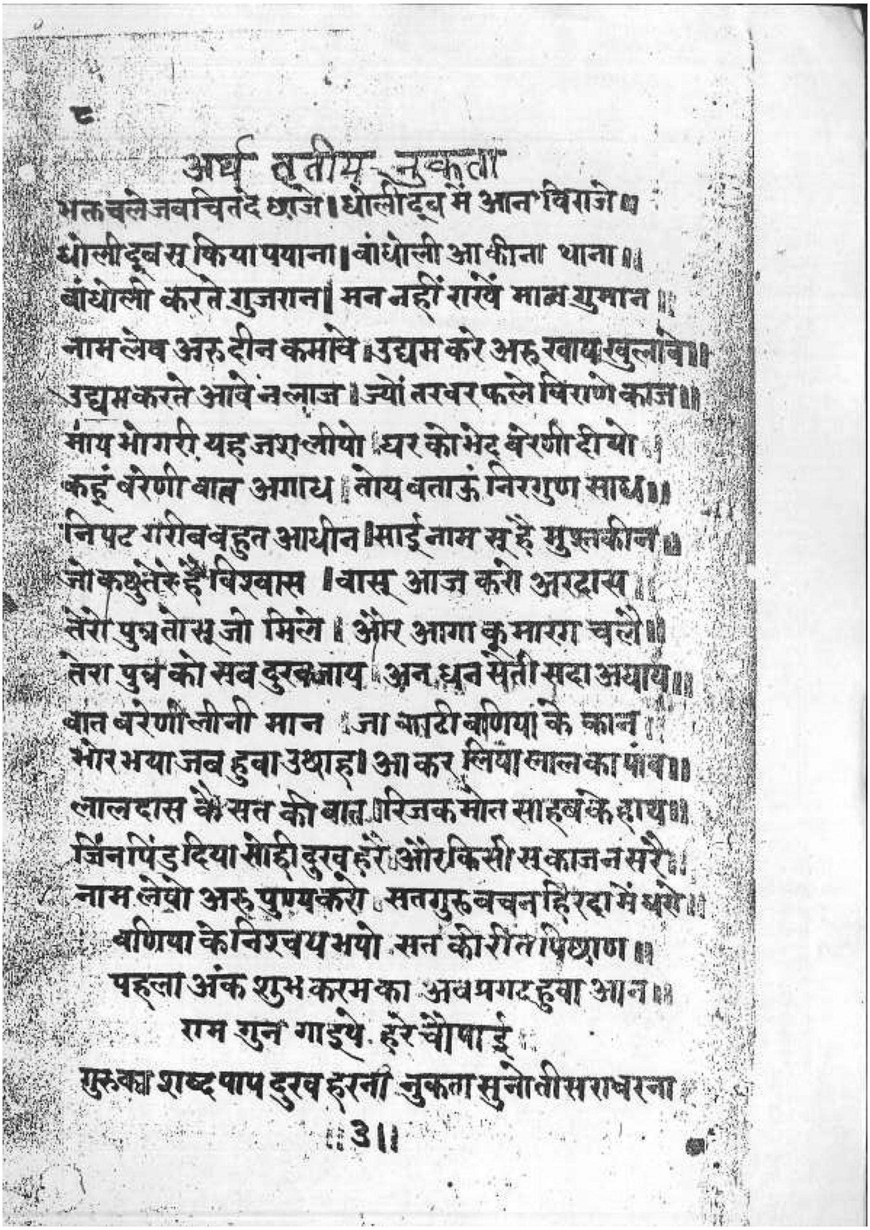

८

अर्थ तृतीय नुक्ता

भक्त चले जब चितदे छाजे। धोलीदूब में आन विराजे॥
धोलीदूब सू किया पयाना। बांधोली आ कीना थाना॥
बांधोली करते गुजरान। मन नहीं राखें मान गुमान॥
नाम लेवे अरु दीन कमावे। उद्यम करे अरु खाय खुलावे॥
उद्यम करते आवे न लाज। ज्यों तरवर फले पिराणे काज॥
मांय भोगरी यह जश लीयो। घर को भेद बेरणी दीयो॥
कहूं बेरणी बात अगाध। तोय बताऊं निरगुण साध॥
निपट गरीब बहुत आधीन। साईं नाम सू है मुस्कीन॥
जो कछु तेरु है बिस्वास। वास आज करो अरदास॥
तेरो पुत्र तासु जो मिले। और आगा कु मारग चले॥
तेरा पुत्र को सब दुख जाय। अन धन सेती सदा अघाय॥
बात बेरणी लीनी मान। जा आदी बणिया के कान॥
भोर भया जब हुवा उछाह। आ कर लिया लाल का पांव॥
लालदास कै सत की बात। रिजक मोत साहब के हाथ॥
जिन पिंड दिया सोही दुख हरै। और किसी स काज न सरै॥
नाम लेवो अरु पुण्य करो। सतगुरु बचन हिरदा में धरो॥
बणिया के निश्चय भयो सत को रीत पिछाण॥
पहला अंक शुभ करम का अब प्रगट हुवा आन॥
राम गुन गाइये. हरे चौपाई
गुरु का शब्द पाप दुख हरनी नुकता सुनो तीसरा भरना
॥३॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

८

अथ नुकता चतुर्थ

बांयोली करते गुजरान। शैल शिखर चढ़ करते ध्यान॥
जेठ मास तप ऐसो करैं। मन कू खैंच सुन में धरें॥
सिंह शिला पै आसन मारो। नीचे सिंह गुजारे ठाडो॥
सिंह सर्प की शंक न मानी। वे सत गुरु सत बाढीज्ञानी॥
सिंह सर्प में औरन कोई। एकहि ब्रह्म सकल घट सोई॥
जेठ मास तप ऐसो करैं। मन इच्छा के कारज सेरं॥
जेठ मास तप कोई करै। गुरु परताप परम पद लहै॥
जेठ मास की कथा सुनाऊं। गुरु परताप परम पद पाऊं॥
या तप कू निश्चय कर जानो। पर हक त्यागो हक पिछाणो॥
याई शब्द जो माने कोई। आपा गवन मिटावे सोई॥
चौरासी के पडै न फंदा। सदा शरण राखें गोविन्दा॥
जो आवे तो भाति बधावे। ताकी गत कोई विरला पावे॥
बडी भक्ति भगवंत की। कहें सुनें फल होय॥
जो कोई सुण हिरदे धरै। जीवत मुक्त गत होय॥
राम गुन गाइये हरे चौपाई॥
सत बचन के हिरदे आया। चौथा नुकता मुख से गाया॥

अथ नुकता पन्चम

कोई दिन और रहे बांयोली। जहां सेवक एक अलबेलो नेली॥
सतगुरु सेवा हित कर करै। दूजी आशा मन नहीं धरै॥
गुरु किरपा कर वांपे रीझे। जो आवे सो वाही बूझे॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

१०

माथे धरो लाल ने हाथ । शक्कर बांट दिन और रात ॥
वही बिठायो तखत मकान । सतगुरु करें इकंतर ध्यान ॥
त्रिया एक पर पुरुष से राची । भूल रही जोबन मद माती ॥
देखो एक बिजको भारी । विषय कामना मन में धारी ॥
चली आई जहां बैठे साथ । हाथ ओट मांगो परशाद ॥
कहे अलैयो दरशन आई । मनोकामना कहां कमाई ॥
भई रिसाणी उल्टी नारी । भरी सभा में काढ़ दीनी सारी ॥
अंतर जामी लाल रिसाये । मरख तेली भूल गंवाये ॥
जो कोई करै सो भुगते आप । जाको आप लगत है पाप ॥
वाको कोनो पड़दो पोस । जाको लोय लगत है दोष ॥
हाथ जोड तब ठाडो भयो । मैं सतगुरु तेरो भेद न लयो ॥
तुम हो सतगुरु गहर गंभीर । अब बक्सो मेरी तकसीर ॥
तभी लाल भये महरबान । फिर बैठायो वाही ठांव ॥
खोटी बात करो मत कान । मन मत राखो खुदी गुमान ॥
एक दिन बात ऐसी बन आई । त्रिया एक उमाहे आई ॥
पूछत आई बैठे तहां । देखूं दरश लाल है कहां ॥
कहे अलैयो शक्कर ले । मन इच्छा सोई कह देय ॥
मन की कहूं न शक्कर खाऊं । दरशन कर के घर कू जाऊं ॥
तेली कहे सुनो एक बात । उन सब सौंपो मेरे हाथ ॥
धन पुत्र मांगे सोई दूं । लाल ही लाल पुकारे क्यूं ॥
त्रिया एक कही बात विचार । धन पुत्र जग को व्योहार ॥
श्रवण सुनो लाल को नाम । या कारण आई या ठांव ।

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

११

जाका दरशन देख अनंत सुख होई। वा बिन देखं और न कोई॥
स्त्रिया मन में कियो अंदेशो। भाय भोगरी दियो संदेशो॥
तुम साहब समझो मन माहीं। आवे आस निराशा जाई॥
दया करी भक्ति के भाय। त्यों वा अन्दर लई बुलाय॥
त्रिया सु सुख बोले लाल। दरशन दीना करी निहाल॥
दरशन कर के घर कू चली। सतगुरु मन में समझी भली॥
जबै अल्हैया लियो बुलाई। तुम सिर लीनी बहुत भलाई॥
बहोत्तर बडाई बहु नई भार। भो सागर कैसे उतरे पार॥
नहना मन करज्यो कोई। रीझे आप मुकत गत होई॥
बिना मुकत जब का मन आवे। जरा जगत में मल गंवावे॥
सत गुरु ऐसी कृपा करी। ओछे बरतन पूंजी धरी॥
सत गुरु लाल भये मुशन कीन। अपनी पूंजी लीनी छीन॥
मान बडाई जगत में। करत फिरे अभिमान॥
शब्द शब्द भेद जाणा नहीं। लखा न गुरु का ज्ञान॥
राम गुन गाइये। हरे चौपाई॥
सतगुरु शब्द सुनाया सांच। नुकता हुवा पूरा पांच॥

अथ नुकता षष्टम

सत लोक स आई अवाज़। काल छाडो (करेसो) आज॥
सोच किया स होय अवार। सन्मुख सीरव देवो संसार॥
धुर की बात मत जानो बेली। प्रगट जग्य रची बांधोली॥
सायब तैयब सबका मूंडा। साध पुरातम सभी ढूंढा॥
संत समीपी सभी आये। जो सतगुरु ने चरन लगाये॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

12

१२

साध पुरातम पहलो खोजी। तुरत बुलायो मभू जोगी॥

भजन पुडी घट भीतर धरि। शुभ वाणी की कृपा करि॥

पूंजी देरं कियो इतवार। राम नाम को कियो बैपार

ऐसी बुढ लाल की ओंडी। जात छतीसों सभी मंडी

जीव दया अरु सत का ठाट। मूंडा साध तीन सो साठ॥

ऐसी करी भक्त सु प्रीत। जग माहीं आये जगदीश॥

आंणर जन की पूछी बात। यह जग नहीं चलो शब्द के साथ॥

कठिन पंथ खांडे की धार। सावधान हो उतरो पार॥

यह संसार असत को साखी। येसैं बहुत लगाई मांखी॥

दीन बंधु हो करें बडाई। तुम हो साहिब सदा सहाई॥

तुम हो जन के सदा सुखदाई। बैठी मखी देवो उडाई॥

धसे मुगल के जम अरु दूत। तुरत मुगल वह भयो विपरूत॥

पर त्रिया के हाथ लगायो। तुरत मुगल वह मार गिरायो॥

असुर सिमट कर बहुतई आये। शंक न मानी लूट मचाये॥

प्रजा धन को लूटो अथाह। प्रजापत मन भयो उछाह॥

सन्मुख रहो क्रोध नहीं कीयो। जो सतगुरु मर वस कर लीयो॥

गाफल गये भरम सु भागे। सन्मुख रहे चरन सु लागे॥

चुगलखोर ने चुगली करी। अज्ञानी ने मन में धरी

झूठी झूठी बात बनाई। फौजदार के कान सुनाई

फौजदार कछु भेद न लादा। कर दीना असवार पयादा॥

देहात आये धाधोली। अपनी बानी बोली॥

कोई कहै कछु हम कू लाव कोई कहै दाणा घास दिलाव।

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

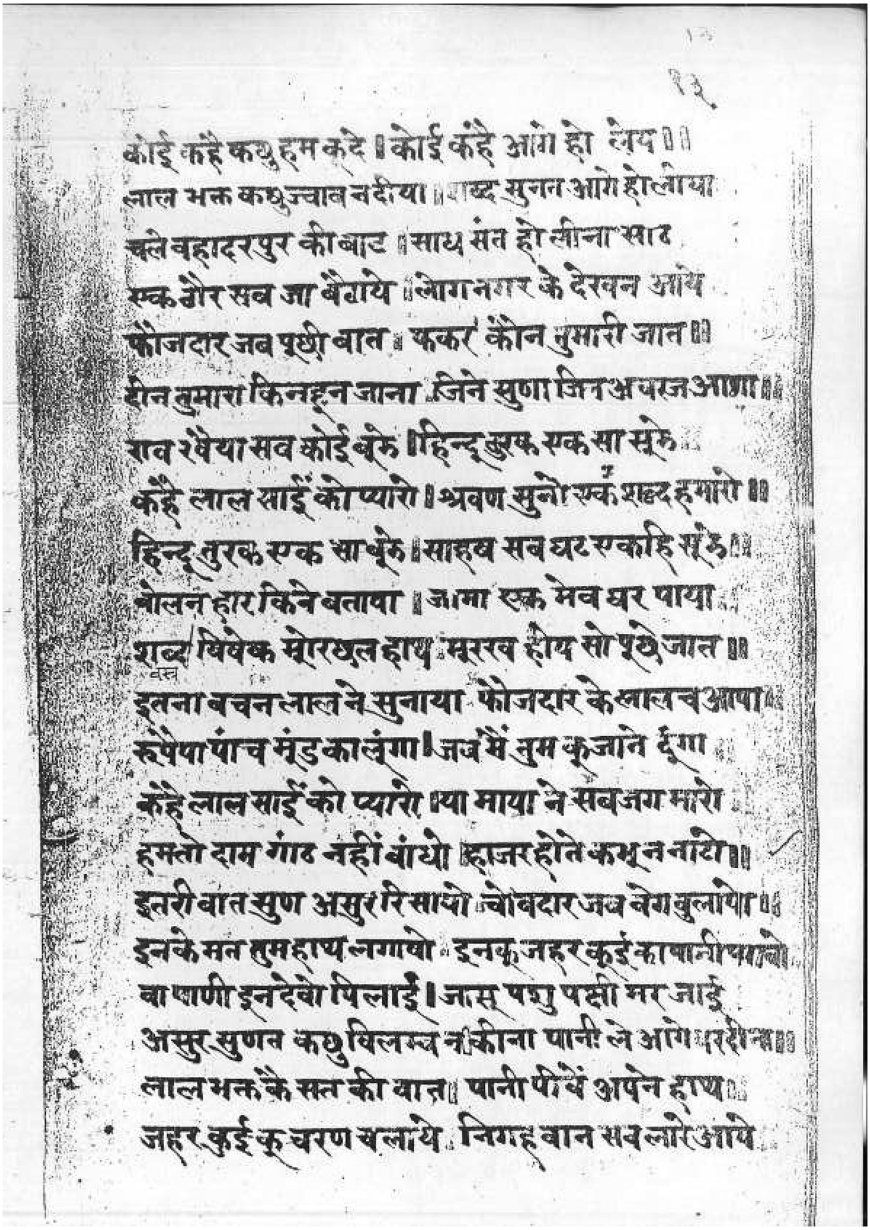

१३

कोई कहै कछु हम कदे । कोई कहै आगे हो लेद ॥
लाल भक्त कछु ज्वाब न दीया । शब्द सुनत आगे हो लीया ॥
चले बहादरपुर की बाट । साथ संत हो लीना साट ।
एक ठौर सब जा बैठाये । लोग नगर के देखन आये ।
फौजदार जब पूछी बात । फकर कौन तुमारी जात ॥
दीन तुमारा किनहून जाना । जिने सुणा तिन अचरज आणा ॥
सब रखैया सब कोई बूझे । हिन्दू तुरक एक सा सूझे ।
कहै लाल साईं को प्यारो । श्रवण सुनो एक शब्द हमारो ॥
हिन्दू तुरक एक सा बूझे । साहब सब घट एकहि सूझे ॥
बोलन हार किने बताया । आतमा एक भेव घर पाया ।
शब्द विवेक मोरछल हाथ । परख होय सो पूछे जात ॥
इतना बचन लाल ने सुनाया । फौजदार के लालच आया ॥
रूपैया पांच मूंड का लूंगा । जब मैं तुम कू जाने दूंगा ।
कहै लाल साईं को प्यारो । या माया ने सब जग मारो ।
हम तो दाम गांठ नहीं बांधो । हाजर होते कभू न नाटो ॥
इतरी बात सुण असुर रिसायो । चोबदार जब वेग बुलायो ॥
इनके मत तुम हाथ लगावो । इनकू जहर कुई का पानी पावो ।
वा पाणी इनदेवो पिलाई । जास पशु पक्षी मर जाई ।
असुर सुणत कछु विलम्ब न कीना पानी ले आगे धर दीना ॥
लाल भक्त के सत की बात । पानी पीवें आपने हाथ ॥
जहर कुई कू चरण लगाये । निगह बान सब लोग आये ।

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

15

१५

तब इलवारी साथ बुलाये । जाकू श्रवण शब्द सुनाये ॥
गांद खोल परशाद मंगाये । लेर वरुण की भेट चढ़ाये ॥
पहला कुंजा काढर लीया । उल्टा वरुण देव कू दीया ॥
दूजा खेंच धरती कू दीया । तीजा खेंच आपने पीया ॥
चौथा खेंच संतन कू प्याया । शक्कर कुंड वाका नाम धराया ॥
पानी पीर हुवा उरधार । बैठा रहा घड़ी दो चार ॥
वाई ठौर तब आ बैठारे । साध संत आ बैठा सारे ॥
चार पहर निश बंदगी करी । साईं सुमरत भली गरी ॥
भोर भयो जब हाकम जागे । चाकर चार जटोरने लागे ॥
वा फकर की खबर औ लावो । वाकू अकल मंजल पहुंचावो ॥
सुनते ही चाकर दोड़े आये । पीर मुरीद ध्यान में पाये ॥
उल्टे चाकर वे फिर आये । नाहक ऐसे फकर सताये ॥
उनका ऐसा सांचा दीन । साईं नाम सू हैं मुस्तकीन ॥
फौजदार जब डेरा आया । दोऊ कर जोड़र बिगर बुलाया ॥
लालदास तुम सच्चे पीर । अब बख्शो मेरी तकसीर ॥
जहर कुवां तें मीठा कीया । साईं भरोसे यह जश लीया ॥
जो कोई पीवे सो धन धन कहै । साको अमर लाल की रहै ॥
औलिर लाल आय घर आये । साध संत मिल मंगल गाये ॥
जगत भक्त विरोध है । मत कोई करो सिहाय ॥
पावक में पग देत हैं । दाज दाज पीछताय ॥
रामगुन गाइये । हरे चौपाई ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

सत राखै कोई सत सुजान । छटा नुकता कहूं बखान ।

अथ नुकता सप्तम

जाको जश कहूं अगम अपारा । जोई सुने सो करै विचारा ॥
बांधौली सु बुध बखानो । तब सत गुरु मन में और बुध ठानी ॥
बांधौली सु किया पयाना । तब टोडी में दीना थाना ॥
टोडी में करते गुजरान । राखें टेक धनी सु ध्यान ॥
अन्न चून बांटें मिष्ठान । नित्य ब्रत दें नित सम्मान ॥
जहां आन बैठे दश भाई । असुर बैठ एक बुध उपाई ॥
खेती करै न बिणजी जाई । और बांट आये खाई ॥
कै कहीं सु पारस लायो । कै याय माल पराया पायो ॥
सभी के मन उपजी बात । घर में ढूके आधी रात ॥
ढूंडे ढांडे कछु न पावें । बिगर दिये कछु हाथ न आवे ॥
तब आकर लिया लाल का पांव । कैसे तिरे हमारी नाव ॥
तुम साहब ने आप खंदाये । तुमारा हम कछु भेद न पाये ॥
तुमारा तो साईं सु ध्यान । बिन जाने मूरख हैरान ॥
कहै लाल कोई करै सो पावे । बिना गुनाह कोई आन सतावे ॥
जाको कियो जाई पै पड़े । असुर आन साधन सु अड़े ॥
साहब सब घट एक हि जानो । वैर भाव मन में मत आनो ॥
भीखन बात बुध ही कही । जन की कला सदा ही रही ॥
बात एक ऐसी बन आई । माती फौज मुगल की आई ॥
आदे चालो यहां सु टालो । चद चालो परबत के मालो ॥
निपट दीन हो बुध बखानी । असुर लोग कछु मरम न जानी ।

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

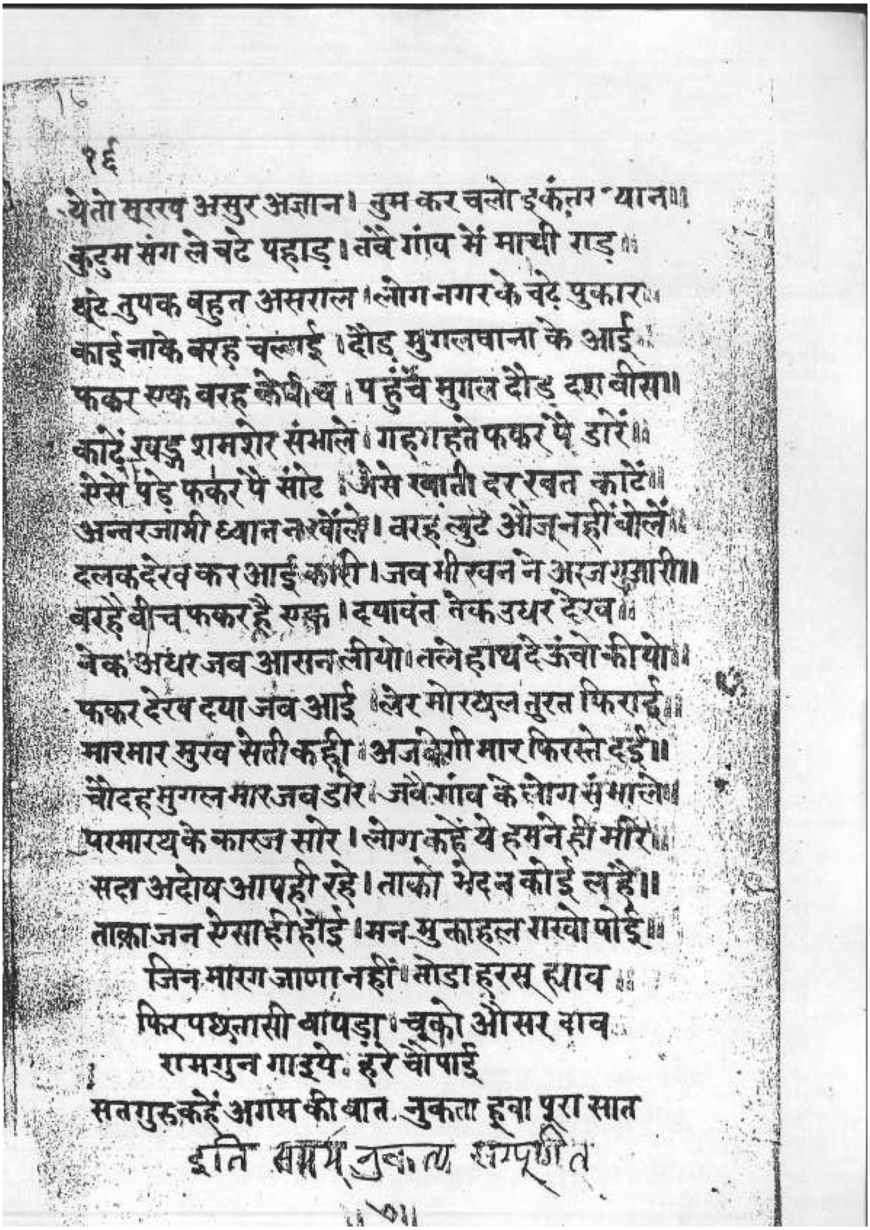

१६

ये तो मूरख असुर अज्ञान। तुम कर चलो इकंतर थान॥
कुटुम संग ले चढे पहाड़। तबे गांव में माची राड़॥
छूटे तुपक बहुत असराल। लोग नगर के चढ़े पुकार॥
काई नाके बरह चलाई। दौड़ मुगलथाना के आई॥
फकर एक बरह कैथी थ। पहुंचे मुगल दौड़ दश बीस॥
काढ़ें खड्ग शमशेर संभाले। गहगहते फकर पे डारें॥
ऐसे पड़े फकर पे सोट। ऐसे खाती दर रवत काटें॥
अन्तरजामी ध्यान न खोले। बरह खुदे औज नहीं बोलें॥
दलक देख कर आई कारी। जब भीखन ने अरज गुजारी॥
बरहे बीच फकर है एक। दयावंत नेक उधर देख॥
नेक अधर जब आसन लीयो। तले हाथ दे ऊंचो कीयो॥
फकर देख दया जब आई। फेर मोरछल तुरत फिराई॥
मारमार मुख सेती कही। अजे कोगी मार फिरस्ते दई॥
चौदह मुगल मार जब डारे। जबे गांव के लोग संभाले॥
परमारथ के कारज सारे। लोग कहें ये हमने ही मीरे॥
सदा अदोष आपही रहे। ताको भेद न कोई लहे॥
ताका जन ऐसा ही होई। मन मुक्ताहल राखो पोई॥
जिन मारग जाणा नहीं। सोडा हरस हाव॥
फिर पछतासी बापड़ा। चूको औसर दाव॥
रामगुन गाइये। हरे चौपाई
सतगुरु कहें अगम की बात. नुकता हुवा पूरा सात
इति सातमं नुकता सम्पूर्ण ते
७॥

17

अलग

अर्थ तुकतां अलग

हरिजन मूरख लोग सताये ॥ तब टोडी सू चरन चलाये ॥
कुटुम संग ले निकल आये ॥ तब न्हारोली आगे आये ॥
न्हारोली का बैठा लोग ॥ कोई आन बनो संजोग ॥
नहिं मन में कछु भूख न प्यास ॥ जा चंगा कीनी निजदास ॥
मुख बोले अरु बात सुनाई ॥ पानी होय तो प्यावो भाई ॥
बोला असुर बहुत गुमराई ॥ पानी सिद्ध कहां सू आई ॥
अब तू सिद्ध कहां कू जाई ॥ अपना गांव चलो लुटाई ॥
जो तो में कछु आशक होतो क्यों मर जातो भाई गोती ॥
कहै लाल साई को प्यारो ॥ पर हक पाय जगत ले हारो ॥
लिखा लेख भुगतेई छूटे ॥ सदा लुटे जो औरहि लूटे ॥
लाल भक्त समको मन माहीं ॥ तुम सच्चे यहां पानी नाहीं ॥
हम तो पानी पीवें आगे ॥ तुम क्या पीवो भाग अभागे ॥
धरती खोदें घालें घाव ॥ पै संगी सू हेर दाव ॥
पानी होय तो भागे प्यास ॥ मूरख रूठी राखें आस ॥
पत्थर रेखा डारे धोय ॥ साध वचन पलटे नहीं कोय ॥
जुगन जुगन जिन हर भजा ॥ जग सू रहा निराश ॥
हर सुमरंत सांसा मिटा ॥ पलपल हर विश्वास ॥
रामगुन गाइये हरे चौपाई
जिनके राम भजन का ठाट ॥ तुकता हुवा पूरा आठ
८ ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

१८

## अथ सुकथा नवम

बादोडी का भाग अभागा । नवै भाग रसगरा का जागा ॥
होरोली स रसगण आये । महूर मुकदम जैठे पाये ॥
सब ने मिल करी प्रणाम । जिन के पूरन हुये काम ॥
शेखर भाव भये महरबान । बात सुनाई का दिवान ॥
जो तुम कहो करें गुजरान । म्हारे निरदावा की आन ॥
दावा में तो दाजव होई । दावा मुक्ति न पावे कोई ॥
दावा में सुख नाहीं कहिये । निरदावा में साहब सहिये ॥
सब राजी हो बात बिचारी । जहां रहे जहां जगह तुमारी ॥
तुम हो साथ साईं के प्यारे । तुम से भेव कहे सो हारे ॥
शीतल बचन भेव ने कहा । जब कोई दिन रसगरा में रहा ॥
नाम लेन कू नगले जांय । जो कोई आय जाय पंथ गहाय ॥
बैठ रहे धनी के हेत । साध संत कू शिख बुध देत ॥
सतवंती शील सरूपा ताके । शीलवंत अरु सत ही भाये ॥
सतरूपा ऐसा दीन कमायो । गुप्त दीन प्रगट दिखलायो ॥
सखी बातो दिखलो बाले । च्यार पहर निश रहो उजालो ॥
काचो करवो काचो सत । अपने हाथ उसारे कूप ॥
सतशील सू ले भरलाई । लेर पिता के आगे आई ॥
शीतल वचन कहे जब तात । सुनले सुता हमारी बात ॥
अजमत करामात है ऐसी । समय बायु बढ़ गई जैसी ॥
हर का कठिन पंथ है न्यारा । हरि सुमरे सो उतरे पारा ॥
सतशील जो राखे कोई । हरि के लोक सदा सुख होई ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

17
३८

बेर न लागे पहोंचे जाई । जिन की आज्ञा गवन मिठाई ॥
सो जो पिता कही सो मानी । सांची बात हिरदा में आनी ॥
धन पुत्री अरु धन पिता । धन संतन सोभाग ॥
कलजुग का मैदान में । लियो कठिन बैराग ॥
राम गुन गाइये । हरे चौपाई
सतगुरु कल में औतर आयो । नुकतो नवों निरत कर गायो ॥

## अथ नुकता दशम

धन धन पुत्र पहाड़ा नाम । धन धन जन्म लियो जा ठांव ॥
धन धन शेरखां गोलखां भाई । निरमल कुंवर लाल की पाई ॥
जन्म जन्म हरि जी के दासा । करे न करी आन की आशा ॥
सतगुरु देह धरी अलि के भाय । निशवासर दरशन कु जांय ॥
एक दिन बोले श्री महाराज । जो मानो तो कहूं अवाज ॥
तुमरे ग्रह कुतुब औतरे । जन्म जन्म के कारज सरे ॥
मान लियो तब हरि को कहो । भली भई फिर जवाब न दयो ॥
सांची बात जाके मन रही । सोई आज गृह में कही ॥
सोदश मास गये जब बीत । कन्या आई ले परतीत ॥
नित नित निज कन्या आई । मान तजे अरु मुक्ति जलाई ॥
यह तो आई कुतुब के हेत । सो पहुंचायो वाकी खेत ॥
हरि भक्तन के सदा अनंदा । निश वासर सुमेर गोविन्दा ॥
एक दिन बोले श्री भगवंत । लाल भक्त को देखु अंत ॥
यह संजोग भलो बन आयो । तुमरे गृह कुतुब पठायो
धन धन कही सो सांची मुनो बिलम्ब भयो फिर बात न बूझी

20

२०

हरि सुमेर तें भली खिहाई । दूजी कन्या औतर आई ॥
खुशी होय बोले लालदास । साहब को मेरे विश्वास ॥
ई तो आई कुतुब के नाव । ले पहुंचावो वाही ठांव ॥
तीजे प्रभु कृपा करी । भक्त हेत तन आशा धरी ॥
धन धन पल पल धन वह घड़ी । कल में कुतुब दहाये हरी ॥
ऐसी कृपा करी बलिजाय । धू सा कुतुब कहाये आय ॥
कुल मंडन आवे निजदास । रहे गर्भ में अठारह मास ॥
ऐसा श्रवण साका सुना । कलि में रहे अठारह दिना ॥
पुत्र पिता पे अमरख कीयो । हम कू दरश कदे न दीयो ॥
तन मन खेंचो देह दुराई । खिदमतगार जब बेग बुलाई ॥
बगला माहिं बिराजें लाल । निरख उठ दासी की चाल ॥
कौन काम कु दौड़ी आई । कुशल क्षेम कछु कहो सुनाई ॥
तुमरो दरशन देखे सदा अनंदा । दरशन देख मिटे सकल के फंदा ॥
आज कुतुब चूंघी नहिं लेय । चलो कृपा कर दर्शन देय ॥
बात सुनत घर कु उठ धाये । सुन के श्रवण शब्द सुनाये ॥
म्हारे प्रान बसें तुम पासा । अब तुम भजन करो प्रकाशा ॥
कुतुब पिता कु पलटो दीयो । अब हम दरश तुमारो कीयो ॥
म्हारे तो दरशन की आशा । दरशन देख मिटे जम फांसा ॥
छाड़ दई जब कल में देई । जाय मिले जहां राम सनेही ॥
तब इतवारी साध बुलाये । न्हाय धोय वस्त्र पहिराये ॥
वहाण सरूपा चाली साथ । कहे पिता सू मन की बात ॥
तुम तो साहिब दीवान । हुक्म करो एक बन्दे निशान ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

२२/ २३

लालाद्रि कल में लाल खंदाये । लाल ही लाल भक्त कहलाये ॥
लाल लाल का जाणें भेव । मूरख लोग कहें या सु भेव ॥
बहुत भक्ति कीनी परगाश । नगला में ही कीनो वास
बैठ रहें धनी के हेत । साध संत कू शिख बुध देत ॥
नित की भक्ति करें अधिकारी । नित्यान्न(?) बांटे न्यामत सारी ॥
च्यार जना एक मतो उपायो । असल भक्त एक साध बतायो ॥
जात छतीसों ओढे हाथ । सदा बरत बांके दिन रात ॥
एके मन में कियो अकीदो । सही पीर जो देह मलीदो ॥
दूजो कहे सही वह पीर । आज लाल के खाऊं खीर ॥
तीजो कहें सही मैं जीव(?) । खाऊं चावल शक्कर घीव ॥
चौथो कहे दरशन कु जाऊं । सखी लाल के शीरो खाऊं ॥
यही मतो कर नगले आये । बैठे लाल भजन में पाये ॥
साध साधनी दरशन आवें । अपनी २ भेट चढावें ॥
चारों वस्तु तुरत ही आई । लाल साई की करें बडाई ॥
जैसा मांगा वैसा दीया । ऊपर बोल भक्ति का कीया ॥
चारुं शोच करें मन माहीं । ऐसा साध कहूं देखा नाहीं ॥
सुख सु कछु कहन नहिं पाये । अंतरजामी ने शब्द सुनाये ॥
ह्यां क्या लीजे दीजे भाई । दाता बोरे आप हि लाई ॥
धन्न वह साहब का सखा । ह्यां तो बैठा फक्कर खुदा का ॥
कीरत अगम अपार है । गिनत न आवे ओड ॥
परमारथ कु औतरे । लालन तरि बारह क्रोड ॥ रामगुल०
ग्यारहवां नुकता ज्ञान प्रकाश । ज्ञान बरसावे सतगुरु आप ॥

२१
२२

पिता कहै सबको मन माहीं । इे किसी के सहारे नाहीं ॥
जहां रहै तहां दीन कमावे । सकल दुख्यो चरन लगावे ॥
सब कोई देखत है संसार । नदी बहुत है अपरम्पार ।
नाव सेतरा लगे न कोई । जल देखा डरपै सब कोई ॥
बहाण सरूपा आगो कीयो । पां देत ही मारग दीयो ॥
चले साध जब हरि के हेत । त्यासेयां बांधोली खेत ।
जहां लाल ने जग्य रचाई । साध संत सब के मन भाई ॥
सहजे सहजे कित फदिन बीते । जेठ मास आये रनजीते ॥
सार मास जब ओलरी । करमी अपनो करम करी ।
जमीदार हल जोडे आय । खेत हमारो बूझो काय ॥
च्यार मसायक पहोंचे आय । जिन के अजबगी मार दिखाय ॥
बाघ मुरक अरु भै सु पटको । असुर आन साथ सु अटको ।
सबै कुटुम कांपो थहराय । या के गाढ़ी लगी बलाय ॥
कै कोई दानो बिन शिरदेव । मूरख लोग जाने नहीं भेव ॥
वाही के घट प्रगटे आन । तें मूरख तोड़ी मेरी कान ।
अपनी अपनी करें अचेत । जुगन जुगन का मेरा खेत ॥
जमीदार उठ बोले सोर । धन अ न लोग भाग हमारे ।
सकल पंथ मिल भाग नपायो । सही पीर खरेवेद आयो ।
भम बांधोली उत्तम ठांव । जहां कुतुब कीनो मुकाम ।
कुतुब कठिन करनी करी परमारथ के काज ॥
कलजुग का मैदान में लाल गही संतन की लाज ॥
राम गुन गाइये हेर चोपाई
सत रारवे कोई संत सुजान दशायां सुकता कहुं बरवान ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

९३

२३

अथ जुम्मा बारहवां

शीलवंत संतन सुखदाई । सत जुग की सी राह चलाई ॥
दौड़ी खबर तिजारे गई । साहबखां सूं जा कही ॥
जात मेव अरु मुसलमान । हिन्दू राह चलाई आन ॥
रोजा बंग निवाज न पढै । ईद बकरीद कूं मन नहीं धरै ॥
रोजा राखै न कलमा कहै । हिन्दू तुरक सूं न्यारा रहै ॥
नबी रसूल कहै न कहावै । राम राम मुख सेती गावै ॥
केता हिन्दू मुसलमान । सबका हि राह चलाई आन ॥
इतनी बात जब असुर ने सुनी । तुरत क्रुद्ध जब अपनी धरी ॥
केते संगी आवो प्यारे । चलो पयादा अरु असवारे ॥
शुरु करो चल अपना दीन । घोड़े बेग करो वो जीन ॥
वह घोड़ा है कहर स्वभाव । थाँपै कौन धर सके पांव ॥
जो कोई पांव पावंडे धरै । तोड़ खाय अरु घायल करै ॥
उस फकर कू देखो जाय । इस घोडा पै लावो चढाय ॥
देहरे जब नगले आये । मक्का महजन बैठे पाये ॥
सख्त वचन जब कहे जरूर । साहबखां पै चलो हजूर ॥
तभी लाल ने शब्द सुनाया । खाना दाना तुरत दिलाया ॥
दाना देर बताई छांह । सतगुरु शोच करें मन मांह ॥
हमने काहू को घर नहीं फोरो । गांठ न काटी धन न हरो ॥
कीडी कुंजर कू दुख नहीं दियो । बिन मालक परमारथ कीयो ॥
गई रैन परभात सुभायो । नामस होकर असुर बुलायो ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

२५

कहे लाल तू सोवे कि जागे। क्या पारखण्ड भरे कू नारे आगे॥
हिन्दू तुरक चलाया शीर। अजमत बिना कहावो पीर॥
के कछु हमकू परचो देय॥ के नातर आगे हो जेय॥
कहे लाल साईं को प्यारो॥ श्रवण शब्द सुनो हमारो॥
आप ही पीर आप ही अमीर॥ आप गृहस्थी आप फकीर॥
कहीं गुनी हो निवत करावे। कहीं चौतरे न्याव चुकावे॥
कहीं कमल हो शोभा देय। कहीं भौंरा हो वासना लेय॥
सब घट रहे सकल सन्यारा। जावेगा कोई अजब न्हारा॥
हमारे तो राम नाम की बात। इतने कहु उठ लागे साथ॥
सब संतन मिल लारो लीयो। अचने तन मन से खस कीयो॥
कहे लाल संतन सुखदाई। साटा संत सब लिये बुलाई॥
घर ही बैठ हरि गुन गावो। काची दात हृदय मन लावो॥
सन्मुख रहियो सेवा करियो। राम नाम हिरदा में धरियो॥
करी प्रणाम अरु उलटे सारे। बारहू साथ टेर नाहिं टारे॥
हम दरशन बिन कैसे जीवें। दरशन बिन अन पानी न पीवें॥
सतगुरु ऐसी राह बताई। गुरु के चरण रहे मिल साई॥
सांची प्रीत रीत जब देखी। चले संग ले लाल थिये की॥
जभी पांव पावड़े धरे। तभी गरदनो नीचा करे॥
तभी पीठ पर बैठे लाल। गाजी मरद भये खुशहाल॥
हाथ लगावत मिट गई बाण। सहज स्वभाव चलाय कू आण॥
देखें तुरक सब अचरज में रहे। दौड़ यार यार सों कहे॥
आंखन परवा देखो यार। इस घोड़ा से लेवो उतार॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

२५

अब घोड़ा से उतरे लाल। गाज़ी मरद कोथही रव्याल॥
तुरकन के कैसी परतीत। चालें अपने कुल की रीत॥
असुर चले आगे से जाई। जीव दया जिनके कछु नाहीं॥
एक सुरख आगे आयो। भर कर शीशो मार गिरायो॥
घूटे माथ पड़ो भै माहीं। ऊले धरो छीतरा माहीं॥
असुर आन मारग में डाडो। लालभक्त के हूवो आडो॥
या कू तुम माथे धर ले चलो। जो कछु चाहो अपनो भलो॥
साध कहें ला हम ही लें। चेला होते गुरु नहीं खें॥
असुर कहे मैं नहीं मानूंगा। या ही के माथे धर लूंगा॥
कहे लाल ला हम ही लें। भाग जाय तो कहां सू दें॥
असुर रिसायो काढी गाली। रातें नैन किया अति भारी॥
पत्थर की मूरत पानी पीवे। तो यह मूवा मुरदा जीवे॥
अचमत कछु दिखावे हम कू। सही पीर हम जानें तम कू॥
धरा सिंह कभे नहीं भाखे। साध नाम को बिरद न लाजे॥
साध भेक संतन सुखदाई। साध भेक की आय सहाई॥
जन हेत मगटे आई। अपनी आपहि करें बड़ाई॥
लेकर छुरी मृग के छुवाई। कूदत मृग गयो बन माहीं॥
जिनके आगे कूदत गयो। सब कू देख अचम्भा भयो॥

साईं सुमरो सुरत कर। छांडो जगत को ख्याल॥
भौसागर पीछे रहा। लालजी हर भज जीता दाव॥

राम गुन गाइये हेर चौपाई॥

सतगुरु का गुण अगम अगाध। बारह तुकना बरना साध

॥१२॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

२९

२६

अथ [illegible] प्रोदशम

देख सुने अचम्भा आवे । मुवा मुर्गा आप जिवावे ॥
असुरन के कैसा ईमान । मुरग [illegible] गया अभिमान ॥
लेकर संग [illegible] आये । साहब के आगे लाये ॥
साहब खां ने पूछी बात । सबको जोड़ कर [illegible] हाथ ॥
कहो पीर का क्या उनमान । देखा पीर सबर की खान ॥
साईं कई हम कु चिन्ह दीया । साईं भरोसे यह [illegible] ॥
तबे मुग़ल ने स्वागत करी । बैठे पीर क्या तुम करी ॥
रोटी खाना करो कबाब । [illegible] खाना [illegible] सबाब ॥
हान थार तो बड़ा अजीज़ । ऊपर मुसलमान की चीज़ ॥
मुसलमान होय खाय खुला । सो वह राह खुदा को पावे ॥
रोटी दई लाल के हाथ । मानो पीर हमारी बात ॥
कहे लाल साईं को प्यारो । साहब एक बनावन हार ॥
हिन्दू तुरक को एक ही साहब । राह बनाई दो अजाब ॥
दूजा होय दुबिधा मत करे । जीव कु मारे मुरदा करे ॥
जो कोई पे घाले घात । गला कटा अपने हाथ ॥
वह [illegible] बदला लेय । साईं [illegible] ॥
ऐसो कोई हमें बतावे । साईं की दरगाह छुडावे ॥
साईं आप अदालत करे । वा दिन स कोई साथ डरे ॥
सब घट वा साईं के हेत । हम तो दयावंत दुरवेश ॥
हम स तो चींटी नहीं मरे । तुम होस सब कारज सरे ॥
इतनी बात मुग़ल स भई । तब रोटी लाल हाथ पे लई ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

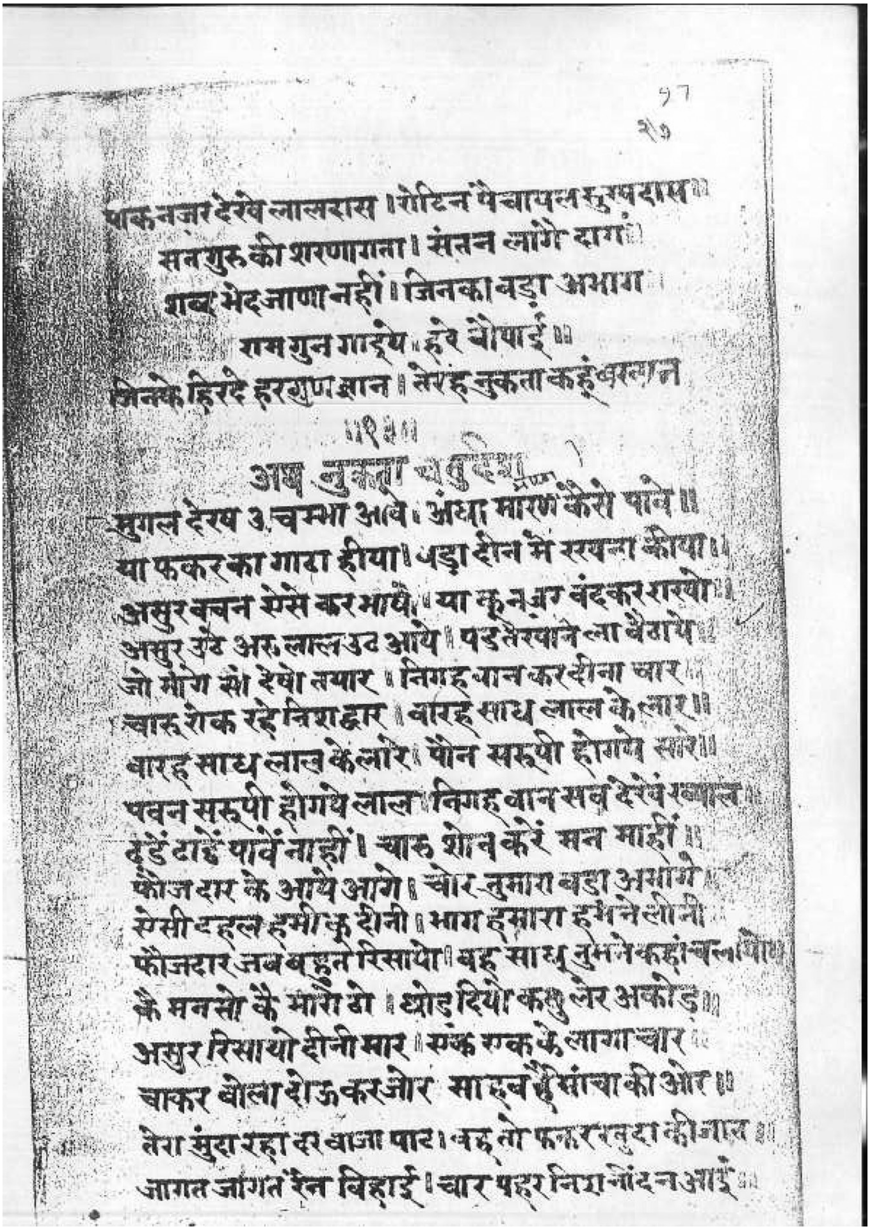

97
२७

पाक नजर देखे लालदास । रोटिन पैचायस सुखदास ॥
सतगुरु की शरणागता । संतन लागे दाग ॥
शब्द भेद जाणा नहीं । जिनका बड़ा अभाग ।
राम गुन गाईये । हरे चौपाई ॥
जिनके हिरदे हरगुण ग्यान । तेरह नुकता कहूं बखान
॥१३॥
अथ नुकता चौदहवां
मुगल देख ३ चम्भा आवे । अंधा मारण केरो धावे ॥
या फकर का गारा हीया । अड्डा दीन में रखना कीया ॥
असुर वचन ऐसे कर भाखे । या कू नजर बंद कर राखो ॥
असुर उठ अरु लाल उठ आये । पड़ देखाने ला बैठाये ॥
जो मांग सो देवो तयार । निगहबान कर दीना चार ॥
चारु शेक रहे निश द्वार । बारह साध लाल के लार ॥
बारह साध लाल के लारे । पौन सरूपी होगये सारे ॥
पवन सरूपी होगये लाल । निगहबान सब देखें ख्याल ॥
ढूंढें टांढें पावें नाहीं । चारु शोच करें मन माहीं ॥
फौजदार के आये आगे । चोर तुमारा बड़ा अभागे ॥
ऐसी टहल हमीं कू दीनी । भाग हमारा हमने लीनी ॥
फौजदार जब बहुत रिसाये । वह साधु तुमने कहां चलाये ॥
कै मनसो के मारो दो । छोड़ दियो कसु लेर अकोड़ ॥
असुर रिसायो दीनी मार । रुक रुक के लागा चार ॥
चाकर बोला दोऊ कर जोर । साहब दीखे सांचा की ओर ॥
तेरा मुंदा रहा दरवाजा पार । वह तो फकर खुदा की नार ॥
जागत जागत रैन बिहाई । चार पहर निश नींद न आई ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

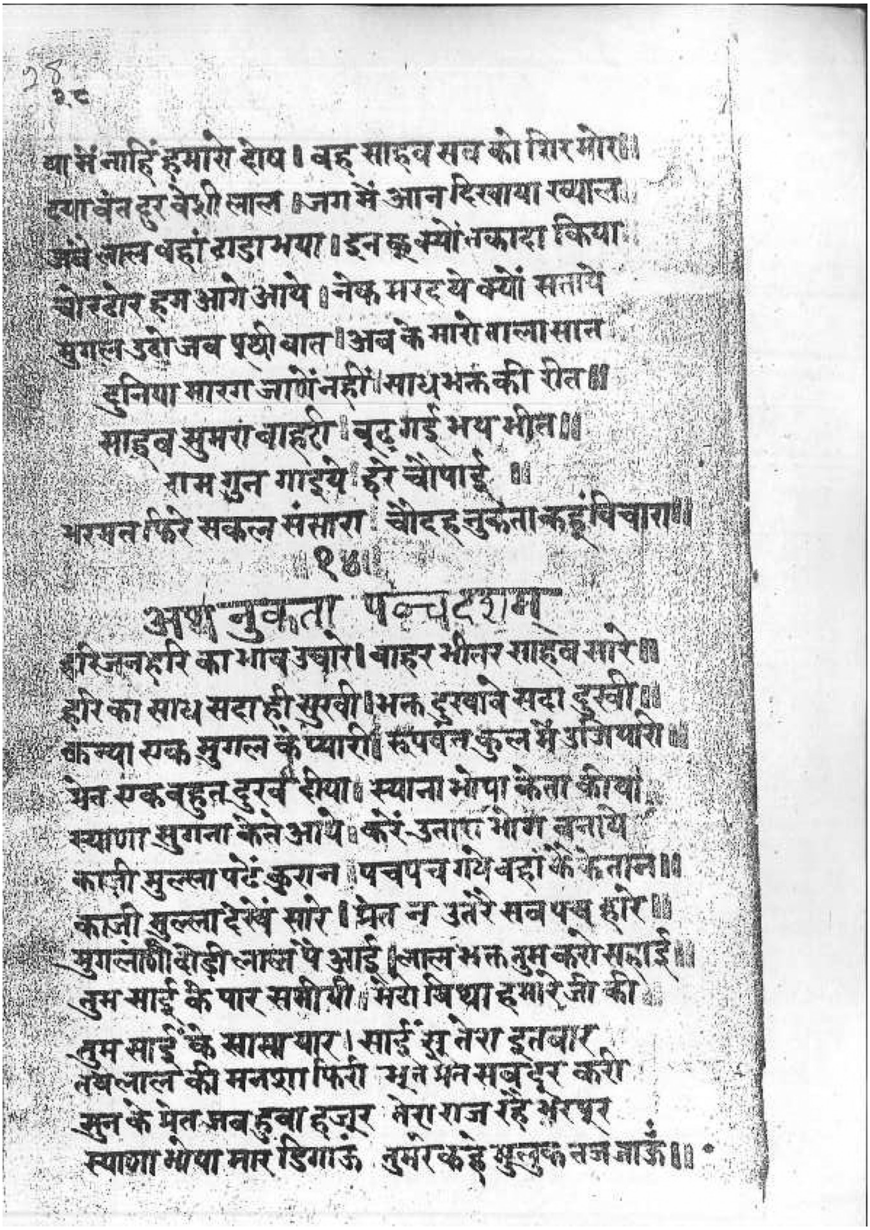

२८

या में नाहिं हमारो दोष। वह साहब सब को सिर मोर॥
ख्यावेंत हुर वेशी लाल। जग में आन दिखाया ख्याल॥
अंबे लाल वहां ठाडा भया। इन कू क्यों भकादा किया॥
चोरदोर हम आगे आये। नेक मरद ये क्यों सताये
मुगल उठो जब पूछी बात। अब के मारो साला सात
दुनिया मारग जाणें नहीं। साध भक्त की रीत॥
साहब सुमरा बाहरी। बूद गई भय भीत॥
राम गुन गाइये हेर चौपाई॥
भरमत फिरे सकल संसारा। चौदह नुकेता कहूं विचारा॥
१४॥

अथ नुकता पञ्चदशम्

हरिजन हरि का भाव उधारे। बाहर भीतर साहब सारे॥
हरि का साध सदा ही सुखी। भक्त दुखावे सदा दुखी॥
कन्या एक मुगल के प्यारी। रूपवंत कुल में उजियारी॥
भूत एक बहुत दुख दीया। स्याना भोपा केता कीया॥
स्याणा सुगना केते आये। करें उतारा भोग बनाये
काजी मुल्ला पढें कुरान। पचपच गये वहां के केतान॥
काजी मुल्ला देखें सारे। भूत न उतरे सब पच हारे॥
मुगल की दोड़ी लाल पे आई। लाल भक्त तुम करो सहाई॥
तुम साई के पार समीपी। मेरा विथा हमारे जी की॥
तुम साई के खासा यार। साई सू तेरा इतबार
तब लाल की मनशा फिरी भूत भ्रम सब दूर करी
सुन के भूत अब हुवा हजूर मेरा राज रहे भरपूर
स्याणा भोपा मार डिगाऊं तुमरे कहे मुलुक तज जाऊं॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

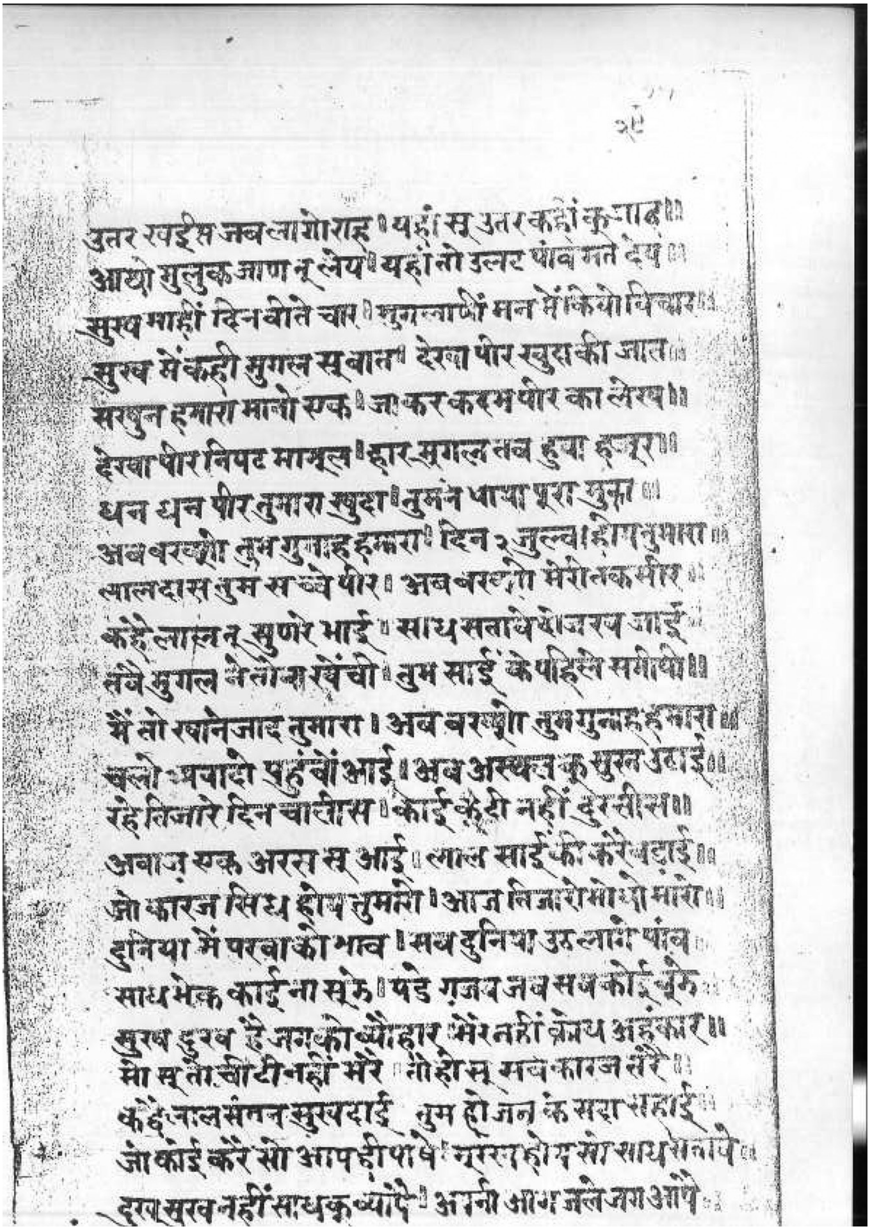
२९

उतर खईस जब लाशोराह ॥ यहां सु उतर कहीं कु नाद ॥
आयो मुलुक आण नू लेय ॥ यहां तो उतर पांव मते देय ॥
सुख माहीं दिन बीते चार ॥ मुगलां मन में कियो विचार ॥
सुख में कही मुगल सू बात ॥ देखा पीर खुदा की जात ॥
सखुन हमारा मानो एक ॥ जाकर करम पीर का लेख ॥
देखा पीर निपट मामूल ॥ हार मुगल सब हुवा हजूर ॥
धन धन पीर तुमारा खुदा ॥ तुमने पाया पूरा गुरु ॥
अब बख्शो तुम गुनाह हमारा ॥ दिन २ जुल्म होगा तुमारा ॥
लालदास तुम सच्चे पीर ॥ अब बख्शो मेरो तकसीर ॥
कहे लाल न सुणो भाई ॥ साध सताये बेजरब आई ॥
तजे मुगल नै तोबा खेंची ॥ तुम साईं के पहिले समीची ॥
मैं तो खानेजाद तुमारा ॥ अब बख्शो तुम गुनाह हमारा ॥
चलो अवादी पहुंचो भाई ॥ अब अस्थल कु सुरत उठाई ॥
रहे निजारे दिन चालीस ॥ कोई कैदी नहीं दुरसीस ॥
अवाज एक अरस सू आई ॥ लाल साई की करे बड़ाई ॥
जो कारज सिध होय तुमसे ॥ आज निजारे मो सो मारो ॥
दुनिया में परवा को भाव ॥ सब दुनिया उठ लागे पांव ॥
साध भेक कोई ना सूके ॥ पड़े गजब जब सज कोई चूके ॥
सुख दुख है जग को व्योहार ॥ मेर नहीं जेय अहंकार ॥
मो सू ता चीटी नहीं मेरे ॥ तो होस सब कारज सेरे ॥
कहे लाल संतन सुखदाई ॥ तुम हो जन के सदा सहाई ॥
जो कोई करे सो आप ही पावे ॥ नरक होय सो साध सतावे ॥
दुख सुख नहीं साध कु व्यापे ॥ अगनी आग जले जग आपे ॥

३०

३०

जबतो रीझे दीना नाथ । माथे धरे लाल के हाथ ॥
साध भेक ऐसा ही चहिये । राखें दया भाव जो कहिये ॥
साध मिले सुख ऊपजे । दुखें अकूल के पाप ॥
जिनकों दुष्ट कहा करे । जिन का सिर पे साहब आप ॥
राम गुन गाइये । हरे चोपाई :— ॥
साधु होय सो हर कू भने । पन्द्रह नुकता चितदे सुने ॥

अथ नुकता सोलहवां

शहर मोजपुर उत्तम गांव । जहां साधु एक केर विश्राम ॥
नाम साधु को मनसुखो जाली । जिन सांची प्रीत राम सू पाली ॥
अन्नदान बहुतेरा दीया । भर भर गाड़ी त्यागन कीया ॥
एक दिन मन में ऐसी आई । संग त्रिया सू बात बनाई ॥
सुण त्रिया मन में धर लीजो । ऐसी बात किसी सू न कीजो ॥
सतगुरु करो सख्त को हीयो । कछु मुगल कू परचो न दीयो ॥
भेड़ बराई छेड़े कोय । परचा तुरत दिखावे सोय ॥
अंतरजामी लाल बिराजें । जाका । सेरयें साहब गाजें ॥
पल पल रहें मलाय कसाय । घट घट की ले आवें बात ॥
सहजे सहजे धुन आई । मनसुखा मन में उमंग उठाई ॥
गाड़ी जोड़ चले रहबाट । त्रिया पुरुष हो लीना साथ ॥
चाव चाव चले वह आये । बहुत प्रीत सू दरशन पाये ॥
सतगुरु देख दुराई दीठ । अभिमानी मूं दीनी पीठ ॥
मनसुखा के मन ऐसी आई । लाल साज पैर बगाई ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

३१

बसतर चादर पेरे बगाया। नंगा हो सतगुरु आगे आया॥
जब मनसुका ने अर्ज गुजारी॥ अब कहिये सतगुरु चूक हमारी॥
तब बोले सतगुरु लाल विवेकी लेने कहा करामात हमारी देखी॥
जहाँ से आयो तहां कू जा। सेडबराई ओज ध्या॥
मनसुको बोलो गुरु रिसायो। कपट हमारो निकल आयो॥
ज्यौं हीरा फोडो नहीं फूटे। रेशम गांठ घुली नहीं खूटे॥
करम किवाड़ कौन सू खुले। भयो उदास जब उल्टो चले॥
उल्टे गये खेत दो चार। सतगुरु मन में कियो विचार॥
ज्यों जननी पुत्र कू मारे। पलक एक में गोद पसारे॥
महर वान हो प्यावे शीर। जब पुत्र की आवे पीर॥
कहें लाल संतन सुखदाई। मनसुकाय वेग लावो बुलाई॥
जिनस वक्षात किया इतबार। एक कहते ई उठ गये चार॥
मनसुकाय लेकर उल्टे आये। आन गुरु के चरन दिखाये॥
देखत चरन मिटे संताप। महर वान हो सतगुरु आप॥
धन धन सतगुरु दीदार तुमारा देखत नक्कर गये पाप हमारा॥
कहे लाल तू सुणरे भाई। जग तो चाहे जगत बड़ाई॥
जोर करै सो जग में हारे। साधु नाय जगत के सहारे॥
मान वड़ाई छोड़ दे। यही साध की रीत॥
गुरु मारग जब पायसी। मन लावे परतीत॥
राम गुन गाइये हेर चौपाई॥
सोलह कला कहै सब कोई जो दरशे सो साधु होई॥

१०

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

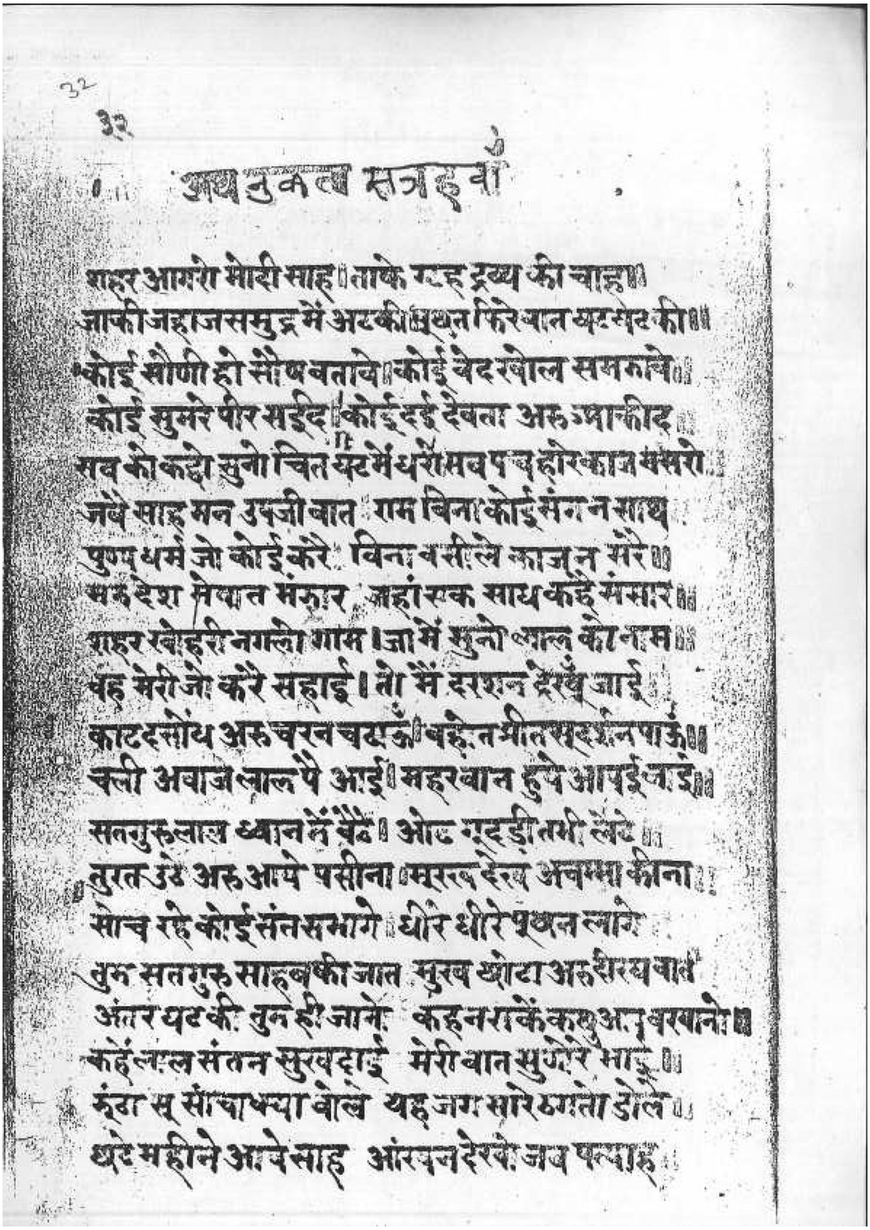

32

३२

अथ नुकता सत्रहवाँ

शहर आमेर मोदी साह । ताके गृह द्रव्य की चाह ॥
जाकी जहाज समुद्र में अटकी । धुखत फिरे बात खटपट की ॥
कोई सौणी हो सौध बताये । कोई वेद खोल समझावे ॥
कोई सुमेर पीर सईद । कोई दई देवता अरु आकीद ॥
सब को कहो सुनो चित घट में धरो सब पच होर काज बसरो ॥
जबै साह मन उपजी बात । राम बिना कोई संग न साथ ।
पुण्य धर्म जो कोई करै । बिना वसीले काज न सरै ॥
अरु देश मेवात मंझार । जहां एक साध कहै संसार ॥
शहर खोहरी नगली गाम । जा में सुनो लाल को नाम ॥
यह मेरी जो करै सहाई । तो मैं दरशन देखूं जाई ।
काट दसौंध अरु चरन चढ़ाऊं । बहुत भील सदरैन पाऊं ॥
चली अवाज लाल पै आई । महरबान हुये आपई जाई ॥
सतगुरु लाल ध्यान लै बैठे । ओढ गूदड़ी तबी लेटे ॥
तुरत उठे अरु आये पसीना । मसरूदे देख अचम्भा कीना ॥
सोच रहे कोई संत सभागे । धीरे धीरे पूछन लागे ॥
तुम सतगुरु साहब की जात । सुख खोटा अरु सरब बात ॥
अंतर घट की तुम ही जानें । कहन राखें कछु अनु बखानें ॥
कहें लाल संतन सुखदाई । मेरी बात सुनो रे भाई ॥
रूंडा सु सांचा ध्या बोले । यह जग सारे ठगता डोले ॥
छटे महीने आवे साह । आंखन देखो जब परवाह ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

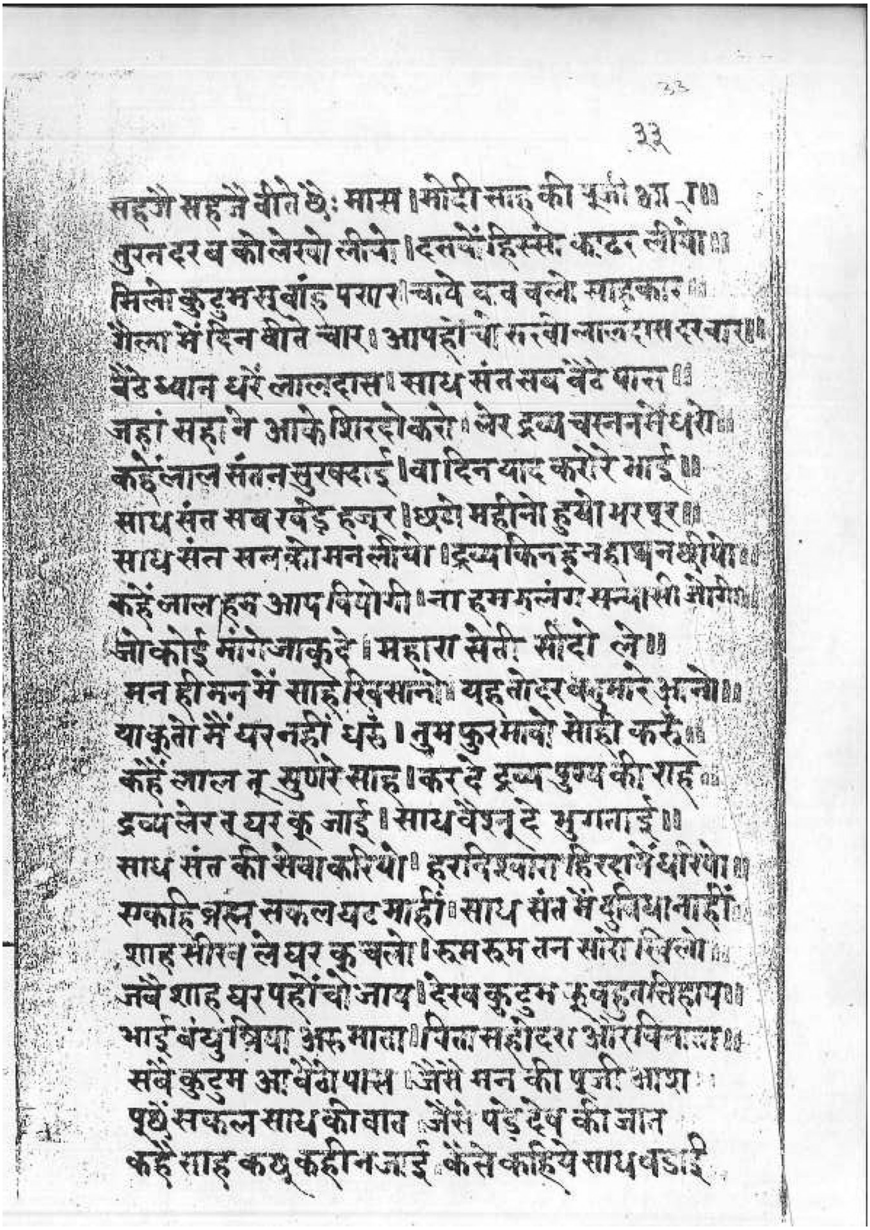

33

सहजे सहजे बीते छः मास । मोदी साहु की पूजी आस ॥
तुरत दरब को लेरवो लीनो । दसवें हिस्से कादर लीनो ॥
मिलो कुटुम सु बांड पराए । चले दव चलो साहूकार ॥
मेला में दिन बीते चार । आपहों चा सरवा लालदास दरबार ॥
बैठे ध्यान धरें लालदास । साध संत सब बैठे पास ॥
जहां सहु ने आके शिरदो करो । लेर द्रव्य चरनन में धरो ॥
कहें लाल संतन सुखदाई । वा दिन याद करो रे भाई ॥
साध संत सब खड़े हजूर । छटो महीनो हुयो भरपूर ॥
साध संत सब को मन लीयो । द्रव्य किन हु न हाथ न छीयो ॥
कहें लाल हम आप वियोगी । ना हम मलंग सन्यासी जोगी ॥
जो कोई मांगे जाकु दे । महारा सेती सौदो ले ॥
मन ही मन में साहु रिदसानो । यह लेदर बहु मेरे आनो ॥
या कुतो मैं घर नहीं धरूं । तुम फुरमावो सोही करूं ॥
कहें लाल तू सुणरे साहु । कर दे द्रव्य पुन्य की राह ॥
द्रव्य लेर तू घर कु जाई । साध वैश्नू दे भुगताई ॥
साध संत की सेवा करियो । हरदिल प्यारा हिरदा में धरियो ॥
सकहि भस्म सकल घट माहीं । साध संत में दुविधा नाहीं ॥
शाह सीख ले घर कु चलो । रूम रूम तन सारो खिलो ॥
जबै शाह घर पहोंचो जाय । देख कुटुम्ब बहुत सिहाय ॥
भाई बंधु त्रिया अरु माता । पिता सहोदर और विधाता ॥
सबै कुटुम आ बैठा पास । जैसे मन की पूजी आश ॥
पूछे सकल साध की वात । जैसे पड़ देव की जात
कहे साहु कछु कही न जाई । कैसे कहिये साध बड़ाई

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

३५

३४

जाका मुख पै बरसै नूर । पल पल हर के रैहे हजूर ॥
निर्मल भति अरु निर्मल चाल । दर्शन देखत भया निहाल ॥
जिने सुनो जिन धन धन कहो । भारते अमर लोक को रहो ॥
समदर अंत विरला लहै । धरती करै शुमार ॥
अम्बर के तारा गिनै । तोऊ कठिन साध को पार ॥
राम गुन गाइये । हेर चौपाई ॥
सतरावें कोई संत सुजान । सतरह मुकता कहूं बखान ॥

अथ मुकता अठारहुं ॥

शहर आगरो उत्तम ठांव । कायथ एक महानंद नाम ॥
जाके घेर द्रव्य बहुतेरो । मान बडाई हुकम घनेरो ॥
करम की रेख टरै नहीं टारी । सुन्दर काया विगसी सारी ॥
करम अंक कोई उघड आयो । काया में एक बिन्दु बन आयो ॥
कहै महानंद सुनरी दारी । या जीवा सूं मर बो आछी ॥
जब घरनी ने मतो उपायो । महानन्द के कान सुनायो ॥
हम रहती पीहर पोसाल । मात पिता संग आती साध ॥
मात पिता संग दरशन पायो । जाको तोकूं भेद बतायो ॥
जाके बारह पुन दरशन होई । राम शब्द गावें सब कोई ॥
जाल छतीसो दरशन आवे । भाग लिखी जैसो ही पावे ॥
दुखिया आवें सुखिया होई । साध अंत पावे न कोई ॥
वाको दरशन देखें जाई । देखत दरश पाप मिट जाई ॥
त्रिया बचन सांच कर माने । करी तयारी छाने ही छाने ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

35

३५

अपनी टहल और कू दीनी। आपन गैल दरश की लीनी॥
टहली जोड़ चले वह बाट। त्रिया पुरुष दो लोना साथ॥
चाव चाव चले वह आये। बहुत भीत सू दरशन पाये॥
दोऊ कर जोडर अर्ज सुनाई। मन मन की तुम जानो साई॥
तुम तारन हो बूड़ी जहाज़। शरन आये की राखो लाज॥
कहें लाल संतन सुखदाई। कहो हमारो मानो भाई॥
अरव खरव सब देह लुटाई। तो तेरो ई सब दुख जाई॥
महानन्द के सांची आई। अर्ब खर्ब सब दियो लुटाई॥
दूजो कला और भी खेलो। लोक लाज कू गैर धकेलो॥
काला मुंह कर जग दिखलायो। गया ताज हथियार बंधायो॥
देखत जगत अचम्भा आये। साधू कहैं करे सो पावे॥
जा त्रिवेणी वेग न्हाये। साध संत मिल मङ्गल गाये॥
सुन्दर काया निकस आई। लाल भक्त की करे बड़ाई॥
जब त्रिया समझी मन माहीं। कुल की बात हिरदे में आई॥
नाक माहिं नक बेसर हेली। वामें बहुत अमोला मोती॥
वे तो रहे लोक के लाज। आस गुरू ऊपर दो दाग॥
सब जन देख बहुत सिहायो। गृहस्थ देख बहुत पछतायो॥
नव भागो सतगुरु पै आयो। सबै गुनन तें माफ कराओ॥
दोऊ कर जोडर अर्ज सुनाई। मेरा मन की जानो साईं॥
सबै गुनान के काटे रूख। यह कोई रही करम की चूक॥
कहैं लालन सुणरे भाई। और न दोष न दीजे काई॥
तेरे तो कछू न विश्वास। दो मोती त्रिया के पास॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

36

३६

त्यागी वस्तु न राखै कोई ॥ क्ख्वारखांय अमर नहीं होई ॥

जहां सांच तहां सब कछु ॥ कूड जहां अकरम्म ॥

सतगुरु शब्द विचारिये ॥ जिनका मिट गया भरम्म ॥

रामगुन गाइये हरे चौपाई ॥

हरि की भक्ति करै सो उतरे ॥ अठारह नुकता हिरदे धरै ॥

## अथ नुकता उनीसवां

कल में आन दियो दूबो ॥ च्यार कूट जश प्रगट हूयो ॥

जो जश सुनो हर्यिले ढाडी ॥ सुनते प्रेम प्रीति अति बाडी ॥

च्यार पहर निश कीया सोच ॥ तन के पाप गये सब मोच ॥

भोर भयो दरशन कू आयो ॥ श्रवण सुनों अरु दर्शन पायो ॥

अलख लखो अरु हर गुण गायो ॥ हरीदास तब नाम धरायो ॥

हरीदास तब अर्ज गुजारी ॥ तुम सतगुरु हो परम उरधारी ॥

निश वासर तेरो गुन गाऊं ॥ महर करो तो नेम पाऊं ॥

सतगुरु शब्द सुनाया एक ॥ एक बार धू माहीं देख ॥

धू की तरफ करी जब दीद ॥ खूटे नैन हुई परतीत ॥

शुकर शुकर ढाडी करै ॥ देखत दरश चरनन में रहै ॥

मैं तो चरण छोड नाहिं जाऊं ॥ निश वासर तेरे गुन गाऊं ॥

कहें लाल टेक राखो विश्वास ॥ नाम लेवे सो हरि को दास ॥

टेक देर न घर कू जाई ॥ जहां देखे जहां आप इलाई ॥

जब ढाडी अपने घर आयो ॥ देख कुटुम कू बहुत सिहायो ॥

आंख दई जब घर कू आये ॥ धरवत्ता पुण्य से सतगुरु पाये ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

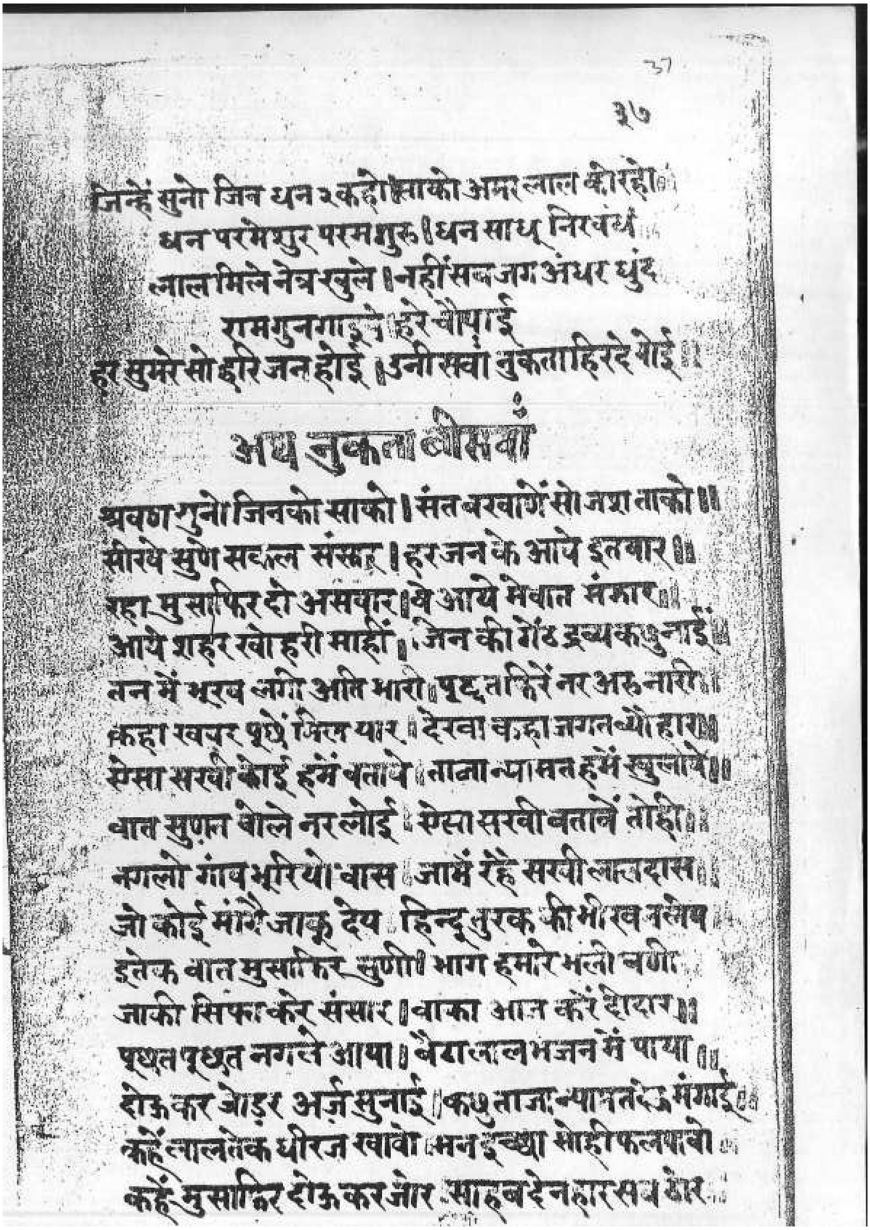

37

३७

जिन्हें सुनो जिन धन २ कहो ताको अमर लाल कोरहो ॥
धन परमेशुर परम गुरु ॥ धन साध निरबंध ॥
लाल मिले नेत्र खुले ॥ नहीं सब जग अंधर धुंद

रामगुनगाइने हरे चौपाई

हर सुमेर सो हरि जन होई ॥ उनीसवा नुकता हिरदे धोई ॥

## अथ नुकता बीसवां

श्रवण सुनो जिनको साको ॥ संत बखाणें सो जश ताको ॥
सोरथे सुणे सकल संसार ॥ हरजन के आये इतवार ॥
रहा मुसाफिर दो असवार ॥ वे आये मेवात मंझार ॥
आये शहर खोहरी माहीं ॥ जिन की गांठ द्रव्य कछु नाई ॥
तन में भूख लगी अति भारी ॥ पूछत फिरें नर अरु नारी ॥
कहा खबर पूछें मिल यार ॥ देखा कहां जगत को हार ॥
ऐसा सखी कोई हमें बताये ॥ नाना न्यामत हमें खुलाये ॥
बात सुणत बोले नर लोई ॥ ऐसा सखी बताबें तोही ॥
नगलो गांव भीरयो बास ॥ जामें रहे सखी लालदास ॥
जो कोई मांगै जाकू देय ॥ हिन्दु तुरक की भीख न लेय ॥
इतेक बात मुसाफिर सुणी ॥ भाग हमारे भलो बणी ॥
जाकी सिफत करे संसार ॥ वाका आज करें दीदार ॥
पूछत पूछत नगले आया ॥ बैठा लाल भजन में पाया ॥
दोऊ कर जोड़र अर्ज़ सुनाई ॥ कछु ताजा न्यामत दे मंगाई ॥
कहें लाल नेक धीरज खावो ॥ मन इच्छा सोही फल पावो ॥
कहें मुसाफिर दोऊ कर जोर ॥ साहब देन हार सब ठौर ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

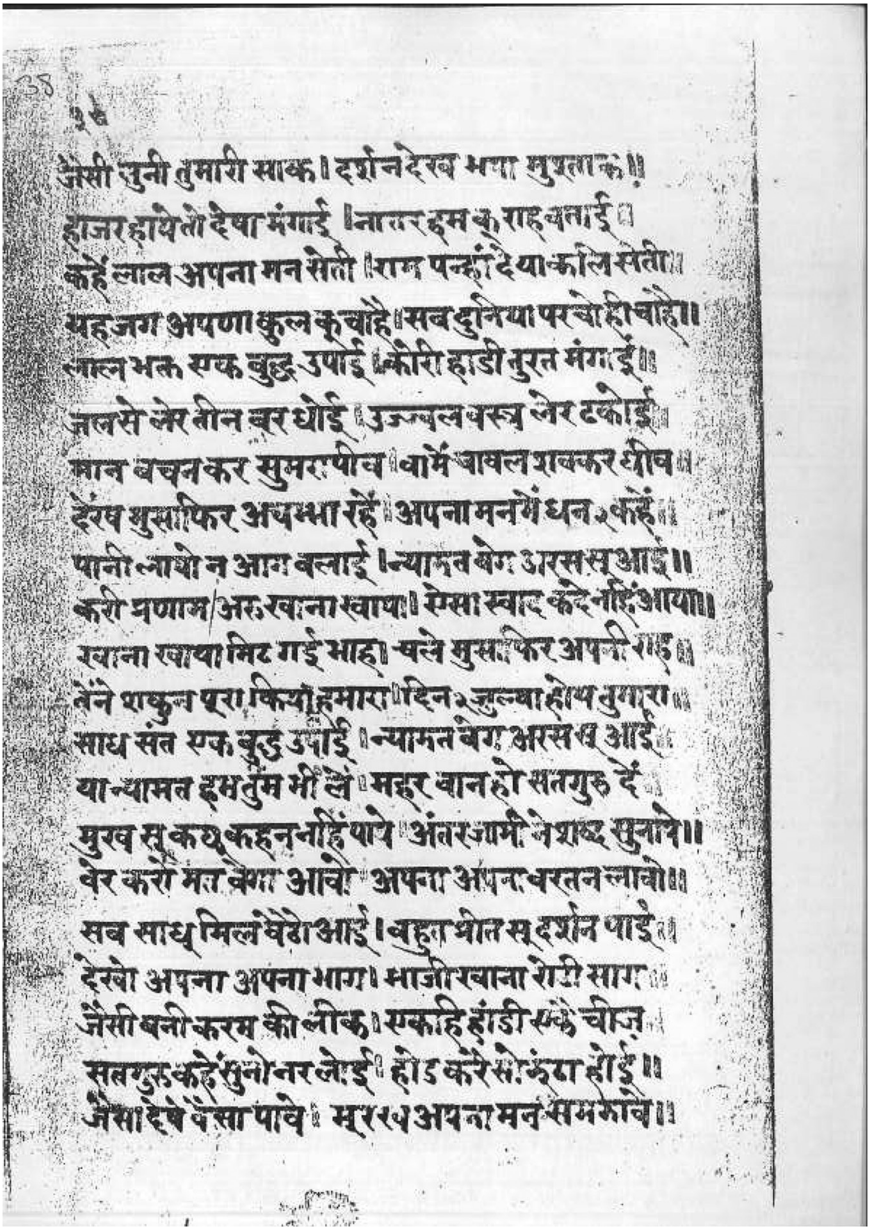
38

३६

जैसी सुनी तुमारी साख। दर्शन देख भया सुख ताके॥
हाजर होवे तो देवा मंगाई। नातर हम कू राह बताई॥
कहें लाल अपना मन सेती। राम पन्हां दे या कलि सेती॥
यह जग अपणा कुल कू चाहे। सब दुनिया पर चो ही चाहे॥
लाल भक्त एक बुद्ध उपाई। कोरी हाडी तुरत मंगाई॥
जलसे नेर तीन बर धोई। उज्ज्वल वस्त्र नेर ढकोई॥
मान वचन कर सुमरण पीव। वा में चावल शक्कर घीव॥
देख मुसाफिर अचम्भा रहे। अपना मन में धन धन कहें॥
पानी नावो न आग बलाई। न्यामत बेग अरस सू आई॥
करी प्रणाम अरु खाना खाया। ऐसा स्वाद कदे नहिं आया॥
खाना खाया मिट गई भाह। चले मुसाफिर अपनी राह॥
तेंने शाकुन पूरा कियो हमारा। दिन दिन जल्वा होय तुमारा॥
साध संत एक बुद्ध उपाई। न्यामत बेग अरस सू आई॥
या न्यामत हम तुम भी लें। महर वान हो सतगुरु दें॥
मुख सू कथ कहन नहिं पावे। अंतरजामी ने शब्द सुनावे॥
वेर करो मत वेगा आवो। अपना अपना बरतन लावो॥
सब साध मिल बैठा आई। बहुत भांत सू दर्शन पाई॥
देखो अपना अपना भाग। भाजी खाना रोटी साग॥
जैसी बनी करम की लीक। एक ही हांडी एके चीज॥
सतगुरु कहे सुनो नर लोई। होड करे सो कैसा होई॥
जैसा देवे वैसा पावे। मूरख अपना मन समझावे॥

३८

सत शीलन पलाल के ।स्या धरम आर भाव
पुण्य करै हर कु भजे ।साधु यही स्वभाव
राम गुन गाइये हेर चौपाई
बीस बिस्वा वह जगदीश ।साधु नुकता वरना वास
अथ नुकता इकीसवाँ

शहर रवोहरी रसगरा गांव ।साधु एक मयालो नाव ॥
एक साधु रसगरा में रहे ।निश दिन हर हर हर हर कहे ॥
जान कुलच्छ कर्म सु पायो ।गुरु प्रताप से साध कहायो ॥
नित की दरश लाल को करे ।सतगुरु वाणी हिरदे धरे ॥
नित की भक्ति करे औ धर्म करो करम ।कोरेख टरे नहीं टारो ॥
शुद्ध स्वभाव कछु नहिं कीया ।टोला से बीछया के दीया ॥
आई कौन कुबुध की घडी ।टोला सेन बीछया मरी ॥
मुख सु कछु न उपडा ज्वाब ।बीछया दई फुंस में दाब ॥
जब बलाहस आई धैन ।रांभे ओर पुजावे नैन ॥
फिर फिर आवे फिर २ जावे ।रांभे बहुत २ डिराबे ॥
कौन जन्म का उघडा पाप ।बीछया बिन आगो संताप ॥
जागत २ रैन बिहाई ।त्रिया पुरुष दोनु नींद न आई ॥
भोर भयो दरशन कु आयो ।दरशन देख महा सुख पायो ॥
दोऊ कर जोड़ कर बिनती करै ।चढी नाव सतगुरु सु तिरे ॥
सतगुरु कहे फेर कछु शाल ।धरम डंड कछु करो कबूल ॥
कछु राम सु है नहीं न्यारा ।मत जिवावे वह रखवाला ॥
सतगुरु वचन मान सांच साधु कबूल किया रुपया पांच ॥

५०

५०

गुमनजुगन परमारथ कीयो। कोरो करवो जलभर दीनो॥
जब साधू अपने घर आयो। वह अम्रत बीछ्या कूं प्यायो॥
मूंड हिलायो खोले नैन। जब बीछ्या ने देखी थैन॥
उठी बीछ्या अरु चोंखन लागी। जब साधू की शंका भागी॥
त्रिया पुरुष दोनूं करें बडाई। धनधन सतगुरु तें न रह ज्वाई॥
ऐसा कारज तुम सूं होई। मूवा मरा जिवावे न कोई॥
या मरमें कोई बिरला जाणे। साधू होय सो आप बखाणे॥

साध मिले सुख ऊपजे। असुर मिले दुख होय॥
औगुण मेटे गुण करै। सतगुरु कहिये सोय॥

राम गुन गाइये हरे चौपाई॥

प्रेमराम के बिस्वा बीस। नुकता हुवा ये इक्कीस॥

॥२०॥

अथ नुकता इक्कीसवां नरसि

सतगुरु सतजुग औतर आयो। अंतर भेद किनहू न पायो॥
राह चलंतेक दिन बीते। जेठ मास आये रणजीते॥
संवत सोलह से सिरासी। लाल भक्त कथ अगम भगासी॥
कहें लाल तुम साधू सुणियो। बचन हमारो हिरदे धरियो॥
अलख गुरसरूप आगम कीयो। आगे पडे काल चोरासियो॥
काल दुकाल जाको सत रहे। जो कोई साध परत पद लहे॥
सब साधुन ने सरवण सुनी। सुणते ई मन उपजी खुशी॥
कोई कहे हल जोडो अन्न। म्हारे घरे बहुलेरो धन्न॥

## APPENDIX A.2

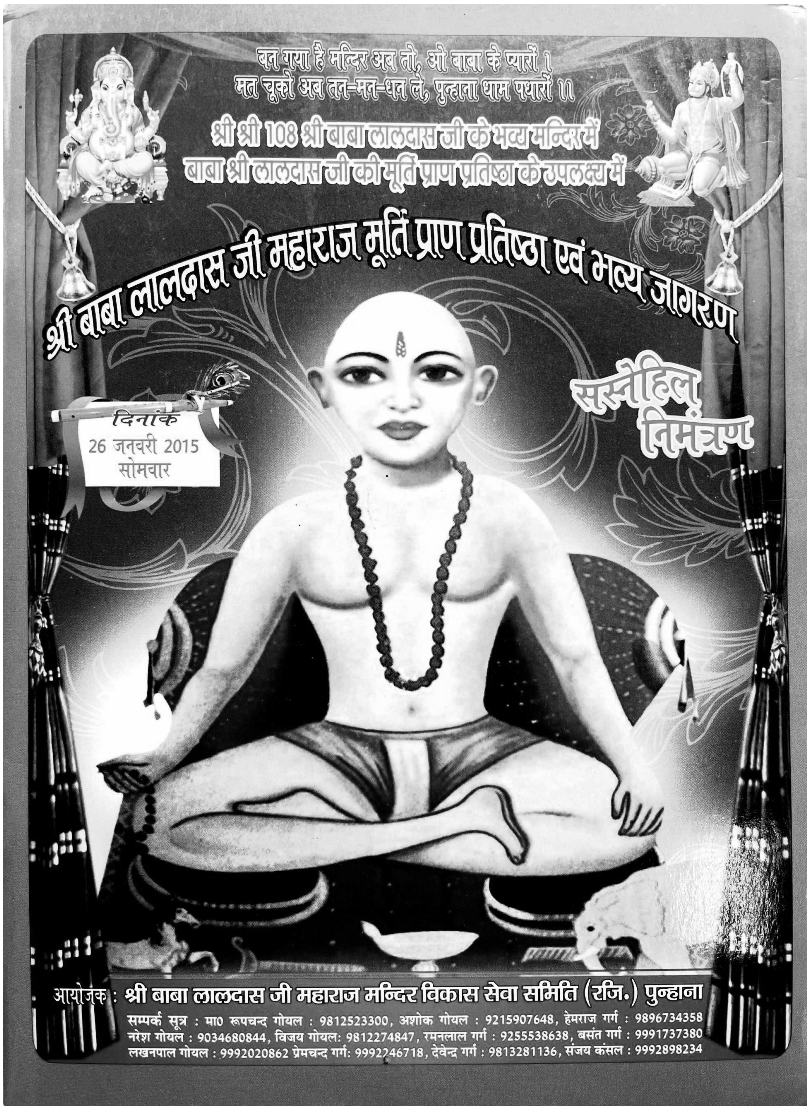


https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

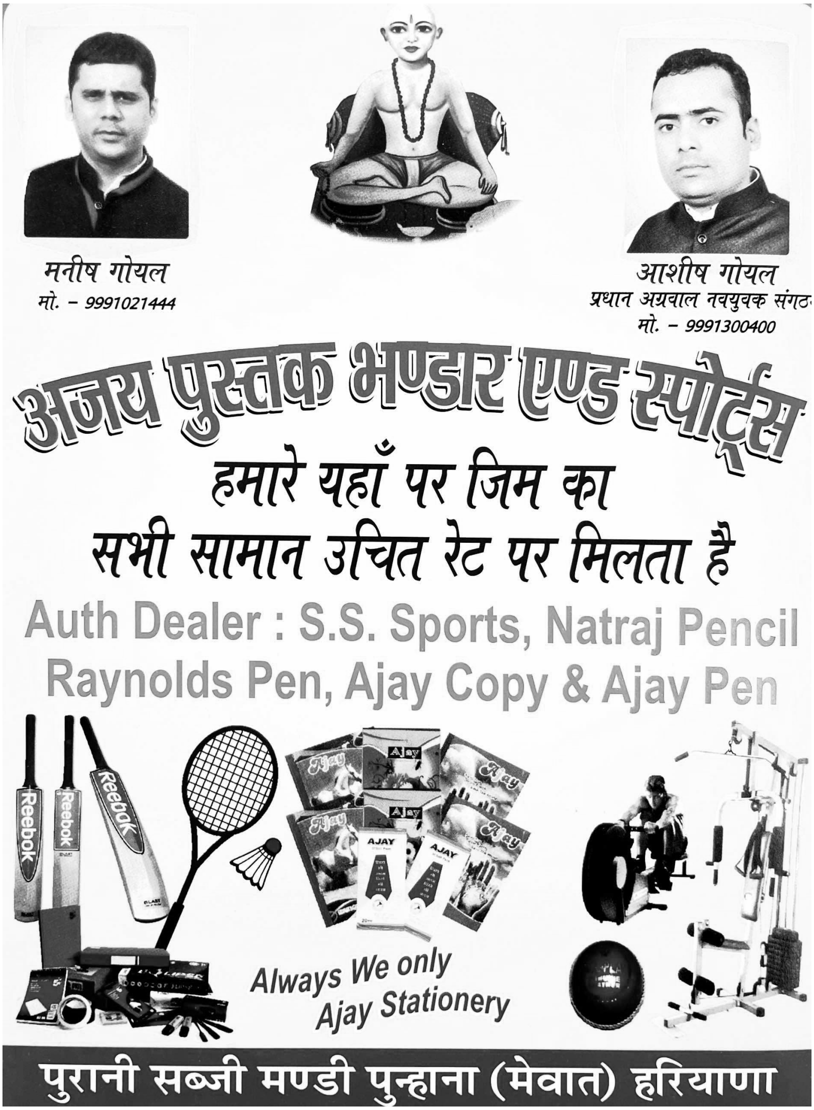


https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

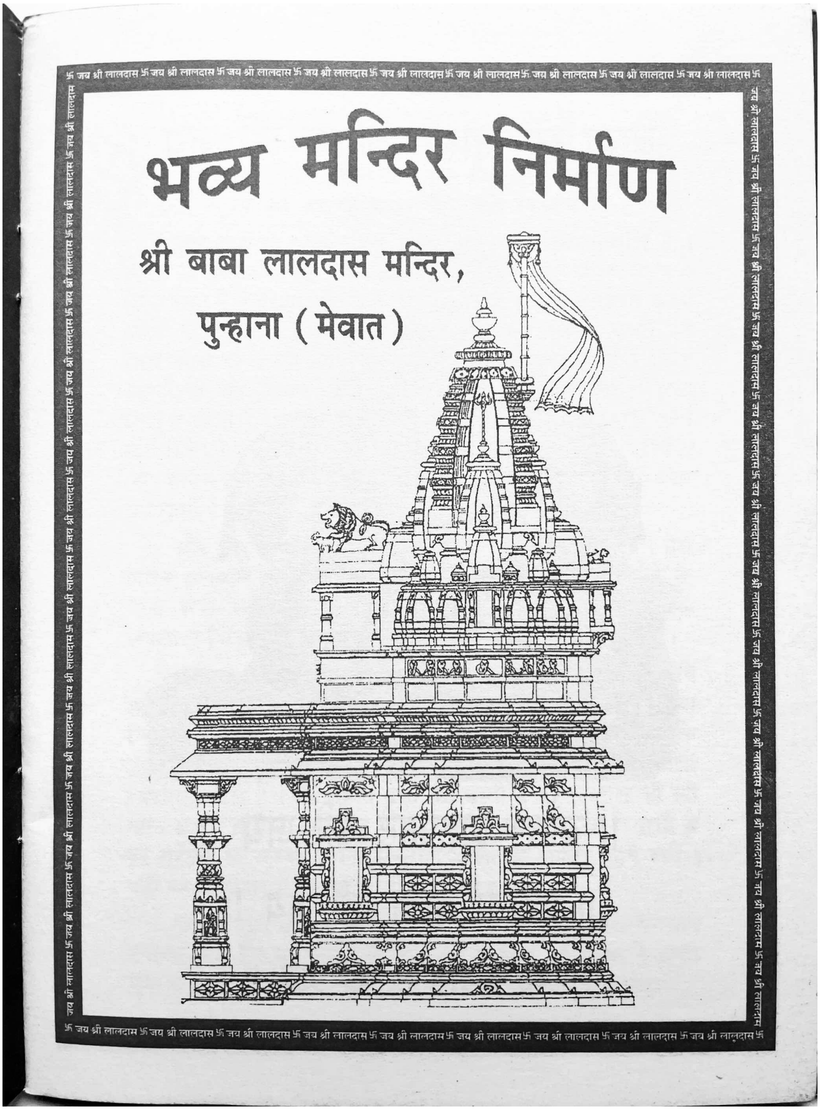


https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

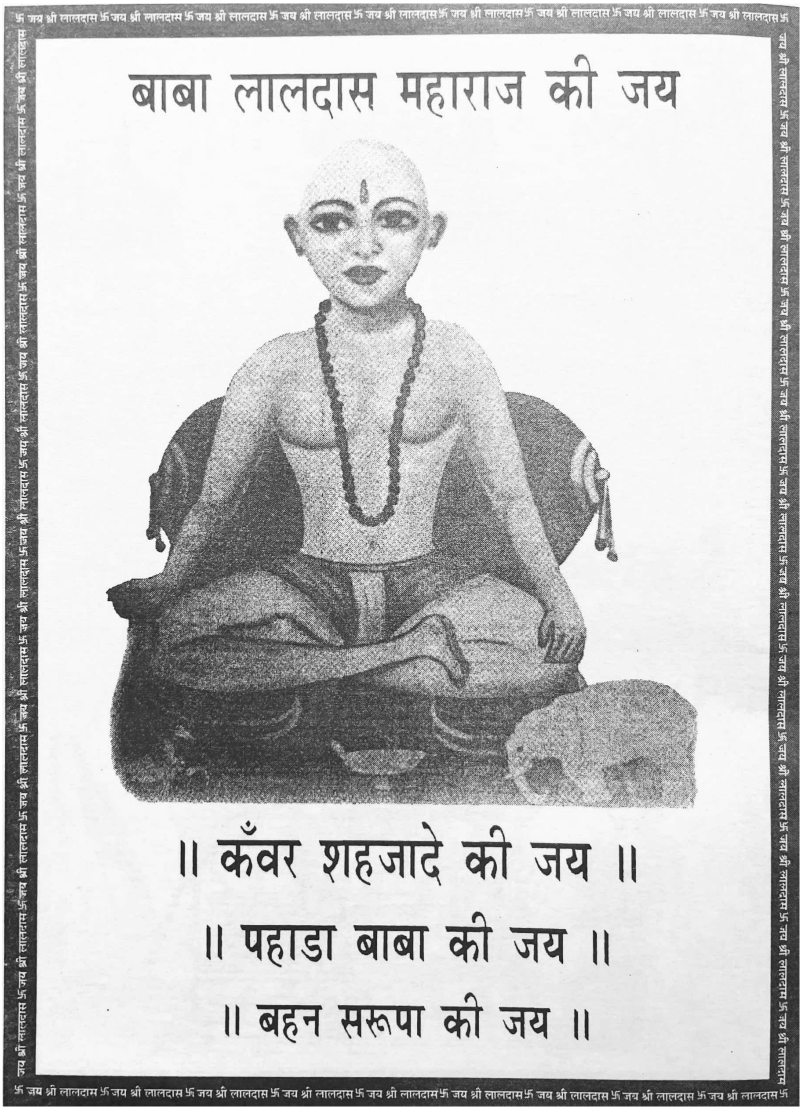


https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

# श्री लालदास अवतार (कथा)

सत शील तप लाल के, दया धर्म और भाव ।
पुण्य करे हर कू भजे, साधु यही स्वभाव ॥

चमत्कार के प्रति नमित होना एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है । संसार में असम्भव को संभव करने की क्षमता को चमत्कार नाम दिया गया है । यह कार्य सहज नहीं, दु:साध्य है ऐसे दु:साध्य कार्य करने वाली विभूतियाँ पुण्यों के प्रभाव को प्रसार करने के साथ-साथ पापों की अति के प्रसार में इति कारक होती है । उन विभूतियों का निष्प्रह जीवन-दर्शन भीतर-बाहर से निर्मल तथा विशुद्ध रहता है । फलत: विभूतियों के प्रत्येक कार्य मन-क्रम-वचन की त्रिवेणी से शुद्धता के साथ सिद्ध होते हैं । यही सिद्धि जन-मानस को प्रभावित करने में सक्षम रहने के कारण चमत्कार कहलाती है ।

वीर प्रसु राजस्थान वीरता की गाथाओं से परिपूर्ण है । ऐसे पावन धराधाम का सिंह द्वार अलवर क्षेत्र शौर्य का साक्षी होने के साथ सन्त लालदास, चरणदास, सहजोबाई तथा दयाबाई के आध्यात्म चिंतन की भी पावन-स्थली के गौरव से गौरवान्वित है ।

सन्त लालदास जी इसी धराधाम में वन्दनीय सन्त हैं । जिन्होंने साम्प्रदायिक सद्भाव का सन्देश देवकर व्यास दुरमति को दूर किया । संत लालदास जी की जन्म स्थली धोलीदूब है जो अलवर नगर के उत्तर में अरावली पर्वतमाला के अंक में शोभित करने वाला रमणीक स्थल है । यह देहात मेवों की बस्ती है । लालदास जी की माता समधा व पिता चांदमल गाँव टोडली ( अलवर ) के निवासी थे जो गरीबी के करण अपनी ससुराल धौलीदूब आकर रहने लगे । यहीं पर ननिहाल में लालदास जी का जन्म हुआ ।

प्रत्येक युग में पाप के बढ़ने पर उनके नाश के लिये भगवान अवतार लेते हैं । महाभारत के युद्ध क्षेत्र में स्वयं श्री कृष्ण ने अपने मुख से अपने दायित्व का ज्ञान कराने अपने सखा अर्जुन से कहा-

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत,
अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।
परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुस्कृताम,
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

इसी कथन की पुष्टि के रूप में सतयुग में राजा हरिश्चन्द्र के रूप में उच्च कुल में, त्रेता युग में भक्त प्रहलाद के रूप में असुर कुल में, द्वापर युग में धर्मराज युधिष्ठिर के रूप में यादव कुल में तथा इस कलयुग के मध्यकाल में सन्त लालदास के रूप में मेव परिवार में अवतरित हुए।

जन श्रुति एवं 'डूंगरसी साध' के अनुसार इस महान शक्ति ने भ्रमर का रूप धारण कर माता के गर्भ में दस माह निवास किया तथा अपने पूर्व प्रण की सम्पूर्ती के लिए अवतरित हुए।

संवत् पन्द्रह सौ सत्तानवे, लाल लियो अवतार ।
सावन कृष्णा पंच रवि, जग हित भक्ति प्रसार ॥

इस साखी के अनुसार विक्रमी संवत् पन्द्रह सौ सत्तानवे के सावन माह के कृष्ण पक्ष की पंचमी वार रविवार की अर्धरात्रि में १२ बजे जग में जन-जन में भक्ति प्रसार हेतु इस धराधाम पर अवतरित हुए।

पौराणिक व प्रागैतिहासिक काल की अनेक विभूतियों के जीवन परिचय जनश्रुतियों से ही मान्यता प्राप्त किये हुए हैं। ऐसी ही एक जन श्रुति श्री लालदास जी महाराज के जीवन परिचय का मूलाधार है।

कहते हैं कि परम शक्ति सम्पन्न सच्चिदानन्द आनन्द कन्द परमपिता परमेश्वर का अंश धर्मराज युधिष्ठिर यज्ञ का आयोजन करना चाहते थे, जिसकी सफलता के सम्बन्ध में तत्कालीन विशिष्ट राजाओं से विचार विमर्श करने के हेतु राजा बलि से परामर्श लेने उनके पास गये। राजा बलि अपने समय के परमदानी राजा थे। ऐसे समय पर उनसे परामर्श लेना आयोजन की सफलता का विशेष अंग माना गया। धर्मराज युधिष्ठिर से राजा बलि ने बातों ही बातों में तीन प्रश्न किये।

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

पहला प्रश्न – गीता का भावार्थ क्या है ?

दूसरा प्रश्न – ऋण लेते समय जो भाव लेने वाले का होता है, क्या वही भाव ऋण अदा करते समय होता है ?

तीसरा प्रश्न – तुम्हारा पिता कौन है ?

धर्मराज युधिष्ठिर ने उत्तर दिया–

मन की तो मन जाने, तन ही जाने आपदा ।<br>
गीता का अर्थ कृष्ण जाने, माता जाने सो पिता ॥

अर्थात् ( १ ) गीता का भावार्थ श्री कृष्ण ही जानते हैं और वे ही सदैव दिन-रात इसके प्रचार-प्रसाद में सहायक रहे हैं ।

( २ ) मेरे द्वारा कभी कर्ज न तो लिया गया और न अदा किया गया । अतः कर्ज लेने वाला ही उसके मन की वही जानता है ।

( ३ ) तीसरे प्रश्न के उत्तर देने में बहुत ज्ञान व चतुराई की आवश्यकता थी । क्योंकि धर्मराज युधिष्ठिर माता कुन्ती की तपस्या से सिद्ध किये हुए आह्वान मंत्र द्वारा उद्भूत थे । अतः भरी सभा में उस प्रकरण को विलोपित कर गये और उसी भावना से जिस भावना से प्रश्न किया गया था, उत्तर देते हुए कहा 'माता जाने सो पिता' ।

इस प्रश्नोत्तर पश्चात् जब धर्मराज युधिष्ठिर अपने घर वापिस आये तो समस्त वृत्तान्त अपनी माता कुन्ती को यथावत् कह सुनाया, जिसे सुनकर माता ने उन्हें 'गंवार' का सम्बोधन दिया । धर्मराज युधिष्ठिर ने मातृ भक्त होने के कारण अपने हृदय में अंकित कर लिया और कहा कि मुझ गंवार की माता तुम्हीं को होना है तथा मैं आपके आदेश का पालन करेने के लिए कलियुग में गंवार जाति में आपकी ही कोख से जन्म लूंगा । माता के प्रति धर्मराज की यह निष्ठा उनके स्वभावानुकूल है ।

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

लालदास जी के अवतरित होने का समय आने पर परमपिता परमेश्वर भगवान विष्णु ने समय-समय पर जिस भावना से अपने अंश को राम रूप व श्री कृष्ण रूप में ढाला, उसी भावना से कलियुग के मध्य में अपने अंश को अवतरित होने के लिए लालदास रूप में अवतार लेने को कहा तो लालदास महाराज ने अवतार लेने से पूर्व भगवान विष्णु से निवेदन किया कि भगवान मेरी मुक्ति कैसे संभव होगी ? क्योंकि मृत्युलोक में एक साधारण नर रूप में एक जिह्वा का प्राणी रहूँगा जबकि आपके शेषनाग के सहस्त्र फन हैं और प्रत्येक फन में दो-दो जिह्वा है । इसलिये शेषनाग एक बार में ही हजारों नाम का जाप करता है । मुझ एक जिह्वा वाले से कैसे संभव होगा ?

शेषनाग के सहस्त्र फन, फन-फन जिह्वा दोय ।
पापी नर के एक हैं, नाम न बिन गति होय ॥

इस पर भगवान विष्णु ने 'राम तेरे सहस्त्र नाम, पैदागर तेर सहस्त्र नाम' मंत्र देकर कहा कि यह मंत्र तुम्हारे मुक्ति का आधार तो होगा ही साथ ही तुम्हारे भक्तों द्वारा इस मंत्र का जाप करने पर भक्तों की भी मुक्ति होगी । इसी के साथ भगवान विष्णु ने लालदास जी महाराज को उपदेश दिया कि-

निराकार को सुमरण कीजो, यही सीख साधन कू दीजो ।
निरदावा को उद्यम करियो, दयाभाव घट भीतर धरियो ॥
पर हक भीख छीयो मत हाथा, पर-तिरिया को जानो माता ।
अपनो हक जान कर लीज्यो, वित्त समान दान कछु दीज्यो ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

इस उपदेशानुसार लालदास सम्प्रदाय का यह प्रमुख सिद्धान्त है, जिसमें भारतीय भावना की प्रमुखता है, पर मूर्ति पूजा नहीं, क्योंकि निराकार को किसी आकार में नहीं समेटा जा सकता। मूर्ति पूजा तो आध्यात्म का प्रथम सोपान है, इसका चरमोत्कर्ष तो निराकार स्वरूप ही है।

"बिन पगु चलै सुनै बिनु काना, कर बिनु कर्म को विधि नाना ॥"

इसी आश्वस्ती तथा उपदेश के पश्चात् परमपिता परमेश्वर का यह अंश विष्णु लोक से भ्रमर रूप में मृत्यु लोक तक आ पहुंचा और अपनी गुनगुनाहट में सहस्त्र नाम का अनवरत् जाप करता हुआ अपनी माता को ढूँढने निकल पड़ा। इस खोज यात्रा में धौलीदूब के निकट एक कपास के खेत में कपास चुनती हुई अत्यन्त उदारमना नारी को देखा, जो हवा के झोंको से दूसरे के खेत की कपास अपने खेत में आने पर चुन-चुन कर वापिस उसी खेत में डाल रही थी ताकि दूसरे की कपास अपने पास ना रहे। नारी हृदय की विशालता तथा न्यायशीलता देखकर भ्रमर रूपी लालदास ने जान लिया कि यह भक्ति पारायण नारी ही मेरी माता कुन्ती है। इसी समय माता समण रूपी कुन्ती को भ्रमर रूपी लालदास ने अपना रूप दिखाया तो माता समधा ने भी अपने पुत्र को पहचान लिया और कहा कि 'आ मेरे लाल' तथा भ्रमर रूप में कर्ण कुहरों के मार्ग से गर्भ में रूह द्वारा ही प्रवेश कर गये।

चढ़े कपाली हो निजदास, आकर लियो उदर में वास।
पिता चांदमल समदा माय, जिनकी कूँख अवतरे आय ॥

यह नारी धौलीदूब गांव में अपने पिता के घर मेव जाति में समदा के नाम जानी जाती थी और मेहनत मजदूरी करके अपना व

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

परिवार का पालन ८५ वर्ष की अवस्था में भी कर रही थी। यहीं पर अपनी माता की कोख से लालदास जी महाराज ने जन्म लिया।

इस प्रकार से लालदास जी का अवतरण और उनके द्वारा लालदासी सम्प्रदाय का प्रसारण आरम्भ हुआ, जिनके आराध्य देव निरंजन निराकार थे, वे उस महान शक्ति का आभार अणु-अणु और कण-कण में मानते थे। इसीलिये उन्होंने स्वयं ॐ शब्द के साथ निरंजन निराकार तेरे सहस्त्रनाम पैदागर तेरे सहस्त्र नाम का जाप मंत्र अपने भक्तों को दिया। भक्तों द्वारा अपने प्रथम पूज्य आराध्य गुरू को उनकी कृपा को मंत्र-जाप में लालदास महरबान अपनी भक्ति भाव के साथ जोड़ दिया।

मंत्र का मूल ओंकार का 'ॐ' शब्द है, जिसमें निराकार रूप से महान शक्ति सदैव निवास करती है। इसी कारण साधारण वाक्य के साथ भी 'ॐ' को प्रथम स्थान देने पर वह वाक्य-मंत्र मंत्र-शक्ति से सम्पन्न हो जाता है।

अतः प्रचलित सहस्त्र नाम जाप निम्नानुसार है –

## सहस्त्र नाम जाप

ओ३म तेरे सहस्त्र नाम। निरंजन निराकार तेरे सहस्त्र नाम।
राम तेरे सहस्त्र नाम। पैदागर तेरे सहस्त्र नाम।
बाबा लाल महरबान।

लाल साहब के दरबार में, कभी कछू की नाय।
कर्महीन भटकत फिरे, चूक चाकरी माँय॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

## श्री लालदासजी महाराज का जाप मन्त्र

अतुल कुर्सी वेद, कुरान तू हकलात तू रहमान ।

हम बन्दे तेरे तू साहिब, सिरजनहार मेहरबान ॥

ओड़ पास तेरा विस्तार, तुम साहिब सिरजनहार ।

ताँबे का कोट सपाफन ताली, सोने जड़ी किवाड़ी ।

अलहमियाँ आप करो रखवाली ॥

रेन राखे चन्द्रमा, पास राखे सूरज साद राखे थरथरी ।

इक्कीस लोक में आप करे रखवाली ॥

कहे लाल निरन्जन प्यारो,

हर कू मिले सो हर को प्यारो ।

अलह लाल की रक्षा, सतरह दुहाई ।

उपला, परायो ताप, तिजारी कछु रह ना पाये ।

लालदास की रक्षा सही, अपनी भेंट लीजे ।

हमारा काम कीजै ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

# मंगला चरण

श्री परम श्रद्धेय श्री श्री १०८ श्री सनकादिक ऋषि की स्तुति

बन्दों बारम्बार, सनक सनन्दन गुरू चरण
मोहि उतारों पार, कोष अखंड अध्यात्म के ॥ १
शोभित चारों वेद, विमल विशद भण्डार के ।
अन पौरूष समवेत, श्री गुरू सनकादिक प्रवर ॥ २
सतगुरू के गुरू देव हैं, सनक सनन्दन आदि ।
परम गूढ गत भेद को, दीजे गुरू प्रसाद ॥ ३
चार वेद सम चहुँ ऋषि, चार वरण उद्धार ।
चार आश्रमन पार कर, देत विमल फल चार ॥ ४

## पिता श्री चांदमल जी का स्तवन (स्तुति)

धन्य भगत जी चांदमल, धन्य धन्य तव भाग ।
लाल वली कुल चन्द्रमा, पावों रतन चिराग ॥ १

पिता चांदमल तुम बिना, कौन पाय यह भक्ति ।
कुल तारन कुल जन्मियो, धन्य धन्य तव शक्ति ॥ २

तुम परि पूरण तय कियो, पूरण ही फल लीन ।
सतत भक्ति रत ही रहे, परमारथ ही कीन ॥ ३

दूहलोत का गोत में, तुम दूलह भये आन ।
दम्पति की सम्पत्ति रही, राम भक्ति रस खान ॥ ४

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

## माता श्री समदा जी की प्रार्थना

दोहा – माता समदा सुमति, जननी की सर ताज ।
त्याग तपस्या मूर्तिवर, सभी सँवारे काज ॥
कूंख सुफल सब भाँति से, माता तेरी आज ।
हरि दास सुत जन्मियों अटल कमायो राज ॥
शील संतोषी खान तुम, समता की सम राशि ।
कुन्ती कर्म स्वभाव की, बलिहारी सुख साज ॥
धन्य पिता श्री चाँदमल, धन्य सु समदा मात ।
चन्दन के बेडे चन्दन भये, मोती निपजे स्वाँत ॥

## गुरू श्री लालदास जी की वन्दना

श्री गुरू सद वैद्य हैं, रूग्ण हृदय के काज ।
निर्मल उर कर त्वरित ही, देहिं राम अनुराग ॥
लाल मिलावें लाल सों, भव वारिध सों तार ।
लालदास बन जानिये, लाल ख्याल की सार ॥
लाल लाल सब कोई कहै, सेवक साध अनंत ।
लाल ख्याल के भेद को, पावैं बिरला संत ॥
लाल तुम्हारे चरण की, रज को धन्य अनेक ।
धन्य धन्य तव बचना को, बिगड़े बने अनेक ॥
लाल लाल के जौहर को, मूरख जानै नाहिं ।
जानै कोई जौहरी, जो गुण लालन माहिं ॥
भव वारिध के भंवर में, डूबे बहे अनेक ।
लाल दास बोहित बने, बूढ़े तरे प्रत्येक ॥
कौन सुने तेरे बिना, हे लालन के लाल ।
आतम परम प्रकाश की, गल तेरे में माल ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

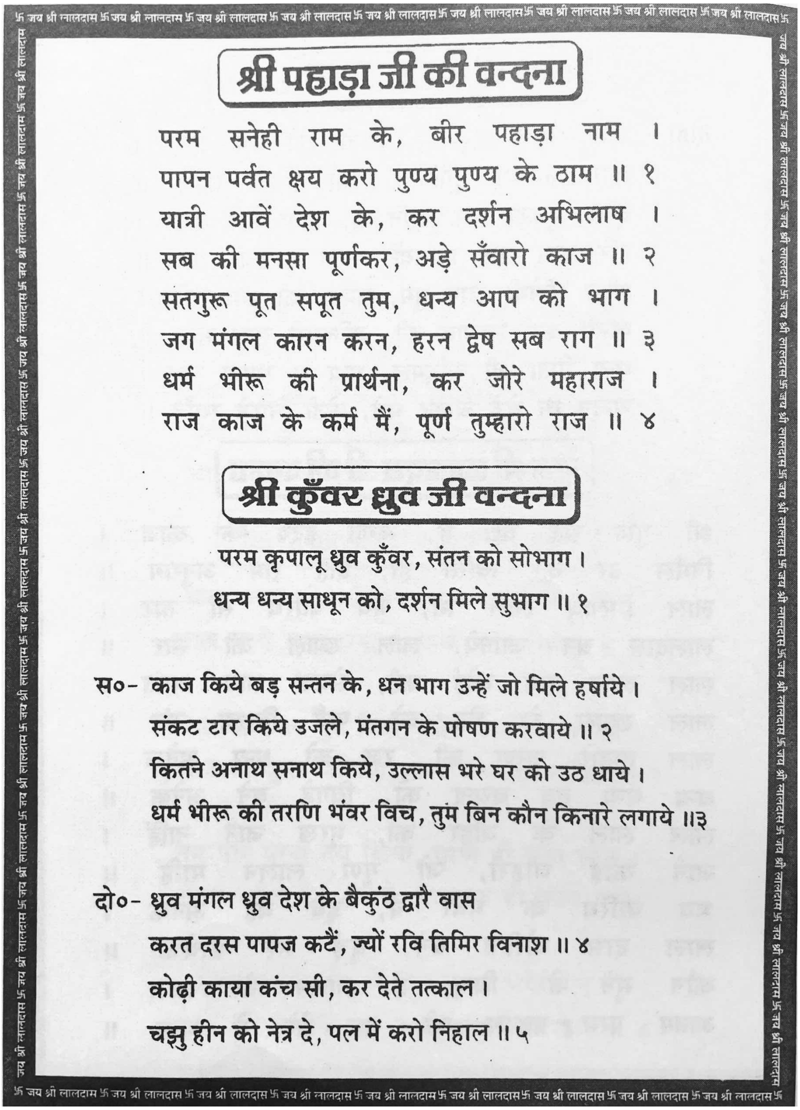

## श्री पहाड़ा जी की वन्दना

परम सनेही राम के, बीर पहाड़ा नाम ।
पापन पर्वत क्षय करो पुण्य पुण्य के ठाम ॥ १
यात्री आवें देश के, कर दर्शन अभिलाष ।
सब की मनसा पूर्णकर, अड़े सँवारो काज ॥ २
संतगुरू पूत सपूत तुम, धन्य आप को भाग ।
जग मंगल कारन करन, हरन द्वेष सब राग ॥ ३
धर्म भीरू की प्रार्थना, कर जोरे महाराज ।
राज काज के कर्म मैं, पूर्ण तुम्हारो राज ॥ ४

## श्री कुँवर ध्रुव जी वन्दना

परम कृपालू ध्रुव कुँवर, संतन को सोभाग ।
धन्य धन्य साधून को, दर्शन मिले सुभाग ॥ १

स०- काज किये बड़ सन्तन के, धन भाग उन्हें जो मिले हर्षाये ।
संकट टार किये उजले, मंतगन के पोषण करवाये ॥ २
कितने अनाथ सनाथ किये, उल्लास भरे घर को उठ धाये ।
धर्म भीरू की तरणि भंवर विच, तुम बिन कौन किनारे लगाये ॥३

दो०- ध्रुव मंगल ध्रुव देश के बैकुंठ द्वारै वास
करत दरस पापज कटैं, ज्यों रवि तिमिर विनाश ॥ ४
कोढ़ी काया कंच सी, कर देते तत्काल ।
चझु हीन को नेत्र दे, पल में करो निहाल ॥ ५

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

# श्री राम स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारूणं ।
नवकंज-लोचन कंज मुख, कर कंज, पद कंजारूणं ॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि नवनील-नीरद सुन्दरं ।
पटपीत मानहु तड़ित रूचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्यवंश-निकन्दनं ।
रघुनन्द आनन्द कंद कौशलचन्द दशरथ-नन्दनं ॥
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारू उदारू अंग विभूषणं ॥
आजानु-भुज-शर-चाप-धर, संग्राम जित-खरदूषणं ॥
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं ।
मम हृदय-कंज निवास कुरू, कामादि खलदल-गंजनं ॥
मनु जाहिं राचेउ मिलहि सो बरू सहज सुंदर सांवरो ।
करूणा निधान सुजान सील सनेह जानत रावरो ॥
एहि भांति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषी अली ।
तुलसी भवनिहि पूजि-पुनि-पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥

**दोहा :**

**जानि गौरि अनुकुल सिय, हियं हरषु न जाइ कहि ।**
**मंजुल मंगल मूल, वाम अंग फरकन लगे ॥**

## प्रार्थना

जय-जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगंवता ।
गौ द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता ॥
पालन सुर धरनी अद्‌भूत करनी मरम न जानई कोई ।
जो सहज कृपाला दीनदयाल करउ अनुग्रह सोई ॥
जय-जय अविनाशी सब घट बासी व्यापक परमानंदा ।
अविगत गोतींत चरित पुनींत माया रहित मुकुन्दा ॥
जेंहि लागि बिरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनिवृंदा ।
निशि बासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिंदानदा ॥
जेहिं सृष्टि उपाई त्रिविद्यि बनाई संग सहाय न दूजा ।
सो करउ उधारी चितं हमारी जानिव भगति न पूजा ॥
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन विपति बरूथा ।
मन बच क्रम बानी छाडि सयानी सरन सकल सुर जूथा ॥
शारद श्रुति सेवा रिषय असेषा जा कहूं कोउनहिं जाना ।
जेहि दीन पियारें वेद पुकारे द्रवउ सो श्री भगवाना ॥
भव वरिधि मदर सब विद्यि सुन्दर गुनमंदिर सुख पूंजा ।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

# श्री बाबा लालदास चालीसा

दोहा : संत शिरोमणि सद्‌गुरू, दीन गरीब निवाज ।
भक्तिन के हित करन को, धरयो दिव्य तनु आज ॥

जय जय श्री लालदास बाबा । बड़े भाग्य जिन दर्शन पावा ॥
भक्त जनन के हैं हितकारी । दीन दुःखी या होय सुखारी ॥
दरश करत सब पातक कटहीं । ध्यान करत सब संकट हरहीं ॥
रूप आलौकिक अति हितकारी । दीनन के पितु औ महतारी ॥
नाथ तुम्हारी आलौकिक शोभा । भयो सुखी सम्मुख महं जोभा ॥
प्रीति आलौकिक बरीन न जाई । गयो निकट जो सो वह पाई ॥
नाथ दास पै कृपा करीजे । दीन जान मोंहि आशिष दीजै ॥
जाके सुख आवें तब नामा । मिलै ताहि चित्त महं विश्रामा ॥
रोगी भोगी जोगी आवे । दरश करत वाँछित फल पावे ॥
चरण शरण में करै मुकामा । होय सकल परिपूरन कामा ॥
भटकट ठोकर खात उबारो । दीन जान बाबा उद्धारो ॥
पाहि पाहि तब शरण नमामी । मातु पिता तुम अन्तर्यामी ॥
ध्यान धरैं जो कोई निशिदिन । मिटे दुःख पावे सुख तत् छिन ॥
अर्चा पूजा ध्यान लगाई । धूप दीप नैवेध बनाई ॥
करैं निवेदित चरणिन मांही । सकल अमंगल मूल नशाहीं ॥
ध्यान ज्ञान सो पूजा करहीं । बाबा चरणिन महं जो परहीं ॥
जो बाबा की पूजा करहीं । मिलै परम सुख नरकन परहीं ॥
लेय चित्त जो बाबा नामा । सकल होंहि नित पूरन कामा ॥
चरण कमल महं ध्यान लगाई । करै नाम को पाठ अधाई ॥
ताको तुरतहिं शोक नशावै । जो बाबा परसादी पावै ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

यदि पावै पुस्तक परसादा । सकल हृदय की हरै विषादा ॥
नाम लेय अरू पाठ करावै । आप करे द्विज सों जो करावे ॥
जो बाबा के दर्शन को जावे । तुरतहिं मनवाँछित फल पावै ॥
जागत सोवत खात जम्हावत । निशि वासर जो ध्यान लगावत ॥
यात्रा मंगलमय हो जावै । जो बाबा का ध्यान लगावैं ॥
सकल कार्य महं सिद्धि पावों । श्री लालदास बाबा जी गाओ ॥
जो जो बाबा जपै हमेशा । ताके मन नहिं रहत कलेशा ॥
पाप ताप संताप नशावै । जो गुरू चरण शरण चित्त लावै ॥
जाको कोऊ पड़े कलेशू सकल अमंगल हरै जनेसु ॥
सात बार महं कोऊ बारा । सब दिन बाबा नाम उचारा ॥
हर दिन हर दिन हर पखवारा । जो बाबा की करै पुकारा ॥
ताहि समय बाबा तहं आई । देहिं हृदय मह ज्ञान बताई ॥
धर्म कर्म अरू राखै प्रेमा । ध्यावैं बाबा को करि नेमा ॥
शांति मिले ताके चित्त माहीं । जो बाबा का ध्यान लगाहीं ॥
धर्म प्रचारक जन उद्धारक । पाप शाप संताप निवारक ॥
शान्ति दूत ऋषि परम तपस्वी । सकल गुननि की खान यशस्वी ॥
अशरण शरण दीन हितकारी । चरण शरण महं परयो तिहारी ॥
दीन जान मोहिं अभय करीजै । कृपा सिन्धु चरणन रज दीजै ॥
जो बाबा चालीसा गावै । सब सुख भोग परम पद पावै ॥
जो गावे बाबा चालीसा । हरै विपति सुख देहि मुनीसा ॥

दोहा : प्रेम सहित चालीस दिन, करे पाठ चित लाय ।
बाबा-बाबा जाप करि, सकल सिद्धि पा जाय ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

राम रामेति रामेति, रमे रामे मनोरमे ।
सहस्त्रनाम तत्तुल्यं, राम नाम वरानने ॥

## मंगलाचरण

'श्री जी बाबा' चरणरज, गणपति बुद्धि अगाध ।
लालदास की दया से, मिटें सकल बहु व्याधि ॥
गुरु कृपा में समाहित, ब्रह्मा-विष्णु-महेश ।
जब गुरु कर सिर पर रहे, कभी न व्यापै क्लेश ।
सतगुरु लाल सुहावने, दें हरजश-सन्देश ।
सहस्त्रनाम के जाप का, मन में हुआ प्रवेश ॥

## श्री लालदास चालीसा

दोहा- श्री गुरु पद्म-पराग का, अंजन आँखन आँज ।
तप्पराग से बहुरि तू, मैले-मन को माँज ॥
हरजश-गा हरिभजन कर, दुई भाव को त्याग ।
सबका मालिक राम है, उससे कर अनुराग ॥

॥ चौपाई ॥

जय निरगुण-निधि सन्त समाजा, सहज सुधारक सबके काजा ।१।
जय श्रम-साधक जय उद्योगी, भोगी रहकर भी बड़योगी ।२।
तुमरी कीर्ति साध जनभाखैं, साखी-शबद-सुधा-रस चाखै ।३।
चांद चन्द समदा-सुत साँचै, गृहस्थ-धर्म भोगरी मन राँचै ।४।
तुम घट-घट की गति पहिचानो, कुमति-निवार सुमति संधानो ।५।
धौलीदूब जन्म-थल पायो, जग में वा थल नाम बढ़ायो ।६।
बत्तीस बरस चिन्तन चित्त धारो, लाल-गुरु शुभ मंत्र प्रचारो ।७।
भक्ति करी भव-भीति भगाई, रहे सभी के सदा सहाई ।८।
गिरि से चुन-चुन ईंधन लाते, काठ बेच नित काज चलाते ।९।
एक निशा पर्वत पर काटी, भोर वही निश्चित परिपाटी ।१०।
अलवर में पहुँचे जब आई, हाथी ने वहाँ धूम मचाई ।११॥
भगी मच गई चारों ओर, बचो-बचो का गूँजा शोर ।१२॥
हाथी-मस्त निकट तुम आयो, सहज-भाव हो शीश नवायो ।१३॥
प्रथम पूज्य गणपति कहलाते, वे भी तुमको शीश नवाते ।१४।

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

तुम अलमस्त न मन में शंका, निरभयता के बज गये डंका ।१५।
लोपी रहकर परम अलोपी, कभी न काहू पै मति कोपी ।१६।
अधर चले न धरती छूवै, बोझा सू ना गरदन मूवै ।१७।।
'चिश्ती-गदन' तिजारा वासी सिद्ध-पीर 'औ' जगत उदासी ।१८।
अलामात लख अजब अनोखो, मन ही मन 'चिश्ती' ने घोखी ।१९।
यह तो पहुँचा हुवा मलंगा, पैदागर का असली संगा ।२०।
अलवर हुवा दोनों का मेला, रचना रची उपाया गैला ।२१।
चिश्ती-अर्ज लाल स्वीकारी, दुई भाव 'औ' दुरमति मारी ।२२।
हिन्दु-तुरक नव राह दिखाई, दुरमति कुतिया मार भगाई ।२३।
प्रेम-प्रीत का पाठ पढ़ाया, द्वेष-क्लेश का किया सफाया ।२४।
नाना-थल से कर प्रस्थाना, सन्त-रूप का साधा बाना ।२५।
पहुँचे चढ़ दृढ़ करी तपस्या, सिंह-सर्प की भुला समस्या ।२७।
बाद तपस्या यज्ञ रचायो, वृद्ध-बाल सब जीमण आयो ।२८।
रुच-रुच सब को भात छकाया, बचा भात खैरात लुटाया ।२९।
बरियाणी-सुत प्राण उबारे, कीरति के बज उठे नगारे ।३०।
जीव-सृष्टि-सेवक विख्याता, सत्य-दया-करुणा संत्राता ।३१।
चोरी-जारी-भीख निषेधी, श्रम कर उदर-भरण संवेदी ।३२।
बाँझ नारी की गोद विकासी, हरिदास की दृष्टि प्रकाशी ।३३।
दुखिया जन के काज संवारे, सफल किये अनगिन भंडारे ।३४।
दुर्व्यसनों से सतत अलक्ता भेद-भाव के पूर्ण त्यक्ता ।३५।
गुरू महिमा के पूर्ण प्रचारक, अलख-अगोचर भक्ति विचारक ।३६।
हरजश-राम भक्ति-अनुरागी, राम-नाम रटना लौ लागी ।३७।
सिर चोटी मन-पूजा-पाठा, साधक बने तीन सौ साठा ।३८।
सहस्त्र-नाम तुमको अतिभाये, निराकार-निर्गुण पद गाये ।३९।
मन से भजो लाल की वाणी, भुक्ति-मुक्ति-दाता कल्याणी ।४०।

**दोहा : सुमरण कर हरिनाम नित, दलि से दुई निकाल ।**
**मेल-मिलन ही ब्रह्म है, कहते प्यारे लाल ।।**
**प्यारे लाल के कथन को, मन में निश्चय धार ।**
**कलयुग के भगवान हैं, लाल 'रूप' अवतार ।।**
**'बोलो लालदास बाबा की जय'**

## साखी (संध्याकाल)-1

लाल जी पाप कटे हरि नाम सू जो जन जपे शरीर ।
नाम बिना बह जांवेगे जैसे नदी भादवे नीर ॥
भाव भजन भादू नदी सभी उठी गरनाय ।
सरिता वे ह जानिंये जो जेठ मास ठहराय ।
ज्ञान ध्यान दत्तब दया । हरि दर्शन सू ख्याल ॥
दस्त कुशादा पाक दिल तू साहिब को लाल ।
गौरी गोविन्द गाइये सामे आई रात ॥
साझं पड़ै जो सोइये अपने धर कू जाये ।
गोरी गोविन्द गाइय नातर रहिये सोय
निश वाशर हर कू रटो लाल कैर सो होय ॥

## राम नाम मतवारे सत गुरू - 2

राम नाम मतवारे सतगुरू..२..सत अरू शील दया निर्लोभी मोहरू ममता मारे ॥

भर भर प्याला हर रस पावे आठ पहर सर सारे ॥
पैंडा में गज हसती मिलियो मयमंता गज भारे
हाथीवान दूर भू टेरे आगा सू हठ जारे ॥
ये मयमंता बहुत है खूनी तीन सलाम करारे ।
हाथीवान उतर कर धायो चरणन शीश नवारे
तुम सतगुरू साहिब के प्यारे मोकू राखो चरण सहारे
सतगुरू वचन सांच कर बोला कुमार्ग छोड दे प्यारे ॥
सीख सुणी गुरू लाल की खुल गये भाग हमारे
हाथीवान साध बुद्ध पाई शरण लाल की रहोरे ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

## राम नाम है ऐसा सतगुरू - 3

राम नाम है ऐसा सतगुरू - २

सुआ पढ़ावत गाणिका तारी खूबा सदना कैसा
भिलनी का बेर प्रीत सू पाये अन्तर नाही अंदेशा
अजामील घर साधू आये नाम की साख हमेशा
दुर्योधन की मेवा त्यागी साग विदुर घर रूखा
नामा ध्रुव के कारज सारे सैन भगत का सांसा
जन प्रहलाद अग्न ते उबारे भक्त की भीड मिटाता
जन रैदास कबीर कमाला लाल भगत हर पासा
जन भीखन कू मिले लाल सतगुरू सुमरो लाल हमेशा ॥

## आयो शरण तुम्हारी सतगुरू - 4

आयो शरण तुम्हारी सतगुरू-२
मैं आधीन तम्हारो सतगुरू अब की बार हमारी ।
हमसे पतित अनेक उबारे ऐसी साख तुम्हारी
महानन्द कू काया दीनी आँख हठीले दाढी ।
बूढत जहाज समुन्दर सू तारी जा दिन पड़ी शहा पे भारी ॥
बोहत की प्रतिज्ञा राखी प्रण कियो तैने भारी
मेटो ग्रहण हुई अमावस्या साध वचन नहीं टारी
जहाँ जहाँ भीड पडी तेरा जन पे तहाँ करै सहाई
लाल प्रभू मोहे सतगुरू मिलो है लाल चरण बली जाई ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

**भजन**

हरजी तैने लाल पठायो आप.....2
लिख चेहरी परवानो भेजो । दई रे दरशन की छाप ।।
हरदम हरजी के रहत हजूरी पाया सूधा जाप। हरजी तैने लाल पठायो आप...
ऐसा सतगुरू हमे है मिलो है जैसो कोई भाई ना बाप ।
उत्तर दखन लाल पूरब पश्चिम जस जाहिर मेवात ।
हरजी तैने लाल...........
कल मे आन गजा गज गाजो दियो है देवन कू जवाब
गाओ रे लाल निरंजन प्यारो हरकू जपे सो हरि कू प्याारो ।

**भजन**

मै बिनजारो मेरा रामजी मैं तुम्हारो ।
मेरो दुबलो सो बैल गुण नही लादे दीजो पंथ बुहार ।।
लादा सत्य शील सुकृत धन, यही बिनज उर धारो ।
ऐसो बिनज मोपे बिनजो ना जावें, कठिन बिनज उर हारो ।
कोटि चन्दन क्रोड धन उबरे जबर महा पतिहारो ।
मारग चलत फूंक पग धरियो जब पावे हरि द्वारो ।।
गाओ रे लाल निरंजन प्यारो, सब साधुन पार उतारो प्रभूजी ।।..2

**भजन**

मै तो गुरू चरणन पर वारी ।
महर करो गुरू दर्शन दीजो, आतम तत करारी ।।
अजपा का मोही सुमरन दीना, उर अंतर हम धारी ।।
गुरू समान और ना कोई, देखा सकल निहारी ।।
भज हरिदास लाल गुरू चरनन कू बारम्बार उचारी ।।
गाओ रे लाल निरंजन प्यारो, हर कु जपे सो हर कू प्यारो ।।

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

## श्री प्रभू लाल दास जी - प्रातः काल के भजन साखी

पौ फटो तडको भयो । जागी जिया जौन ।
सब मिल माँगों राम सू अपनी अपनी चौन ॥
हरि दाता जग मांगता रिजक सबन कू देय ।
जल थल जिया जौन की खबर सबन की लेय ॥
पैदा किया की शरम है पाले दे दे चौंन ॥
पालें पोखे गत करे साहिब बहुत भलो
साँची शरण लाल की पकड़ी । सतगुरू लाल मिलो ॥
ऐसा सतगुरू लाल हैं भीड पडे तो सहाय ॥
अगन जलत प्रहलाद की वर्षा कीनी आय
आधो दरशन पयो लाल को जासू भयो निहाल
शरण गहाई राम की तुम सब के प्रतिपाल
पापज दिन विडार के बैठो देवन दाल
रैन दिनाः तुम कू जपो हिरदै को माल
लाल प्रभु मोहे सतगुरू मिले है जाकी निर्मल चाल ॥
दरश पहाड़ा जी को कीजे मुख बरसै है नूर
परमारथ कू औतरे हरि के रहत हजूर
इन्द्र अखाड़ो नित रहे बाजे अनहद तूर
साधू जन आँवे दरश कू मनसा हो भरपूर
सहस नाम हरि का जपो बैठो शील स्वरूप
लाल प्रभु मोहे सतगुरू मिले है राखो हाल हजूर ॥
दरश कुवर को कीजे । शुभ काम सरेगें ।
सैमिली में बैठ के आछो राज करे ।
जिन के केडे आप है वे काहे कू डरे ।
आ रवा सब छोड के हरि को ध्यान धरे ॥
लाल प्रभु मोहे सतगुरू मिले है जासू नाव तिरै

卐 जय श्री लालदास 卐 जय श्री लालदास 卐 जय श्री लालदास 卐

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

# साखी

**साखी व भजनों का प्रयोग बाबा के हवन के समय करना चाहिये ।**

1 ) लाल जी पहले राम मनाईये, जिम सुमरा जुमल जहान बंधे लाई मेदनी : हरि आपन अमन अमान ॥

2 ) लाल जी आपन अमन अमान है जिन सब जुग दिया भुलाय ।

3 ) लाल जी मैं बलि गई हरी नाम की नौ से सत्तर बार जिन आदम सू औलिया किया हरी करत ना लायो बार ॥

4 ) लाल जी औलिया होना इलम है जगत खिलौना होय । गम खावे त्रिशना बुझी मुख सू मीठा बोल

5 ) लाल जी सुख सू मीठा हो रहा है बड़ा न बोले बोल । आशा माया तुम तजी, शुभ करनी का मोल ॥

6 ) लाल जी करना तुम्हारी कठिन है, किनहून आई हाथ । या जग मैं जस तुम लियो सोहिं चलेगो साथ ॥

7 ) लाल जी साथी तेरा बहु घणा, चोट न खाये कोय । तल अहरन ऊपर घण फिरै, निबटें साथी होय ॥

8 ) लाल जी संकट में हर सुमरिये, जाके सुमरे होवे उद्धार ॥ नाम धू प्रहलाद की, नाव उतारी पार ॥

9 ) लाल जी साहिब अपनो सुमरिये, देकर लम्बी टेर ॥ जब मेरो मालिक मन कर, देत ना लावे बेर ॥

10 ) तारा रैन सुहावनी मकर चाँदनी रात भजन करो दीनानाथ को होवे दरश प्रभात ॥

11 ) आधी रात निखण्ड है हिरनी को पहरो ॥ कह कोई जागे दुखिया दुख भरी कह साधू जन तारो ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

12 ) लाल जी राजा राणा छत्रपती सावधान क्यों ना होय ॥ एक दिन ऐसा होयगा सबकू चले बिछोय ॥

13 ) लाल जी राजा राणा छत्रपती, सुनो खान सुल्तान ॥ जिया चाहो तो हरि भजो, नहीं चन्द रोज मेहमान ॥

14 ) लाल जी शुभ बोलण जग शीतला, सत्य ले और सांच ॥ सब अंधयारी छिप गई उगे पूरण मासी चांद ॥

15 ) लाल जी पूनम जग पूरी हुई कभी ना ओछी होय ॥ दसू दिशा की मंडी, म्हारो सतगुरू लीनी सोध ॥

16 ) लाल जी अटल ओलिया शेरपुर, जाके कंचन बरसे नूर ॥ दरश देख पापज कटै, भागे दुख दलीद्दर दूर ॥

17 ) लाल जी कुंवर संकटे सुमरियो ओडी में धन धीर ॥ आये कू आदर करे डिगे ने बधाये धीर ॥

18 ) लाल जी कुंवर संकट समरीये मेरी कर मुश्किल आसान । लावै पर दल में सू मोड़ कर बाजत है निशान ॥

19 ) लाल जी मातलौक के महल के खुले पावें हरी द्वार ॥ रिम झिम मोती महर के, बरशै अमृत धार ॥

20 ) कलयुग घोर अंधेर सकल भय भीत है ॥ सप्त दीप नौ खण्ड भक्त की जीत है ॥

21 ) कोई पंजीवाल कोई सदीवाल कोई हदफ हजारिया ॥ खडे अदालत के बीच अरज गुजारिया ॥

22 ) रसगण लियो जन्म सैमली आइये ॥ बहण सरूपा लार की हरिगुण गाइये ॥

23 ) वेश बनयो गूदड़ी दुरमत लारी धोय ॥ हरजी की बुद्ध लाल पै, लोग बावरा होय ॥

24 ) सहित कबीले बली कहावें, कुंवर कुतब पहाडा । सोज सांवली सरूपा बरकत निरमल जोग सवाँरे ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

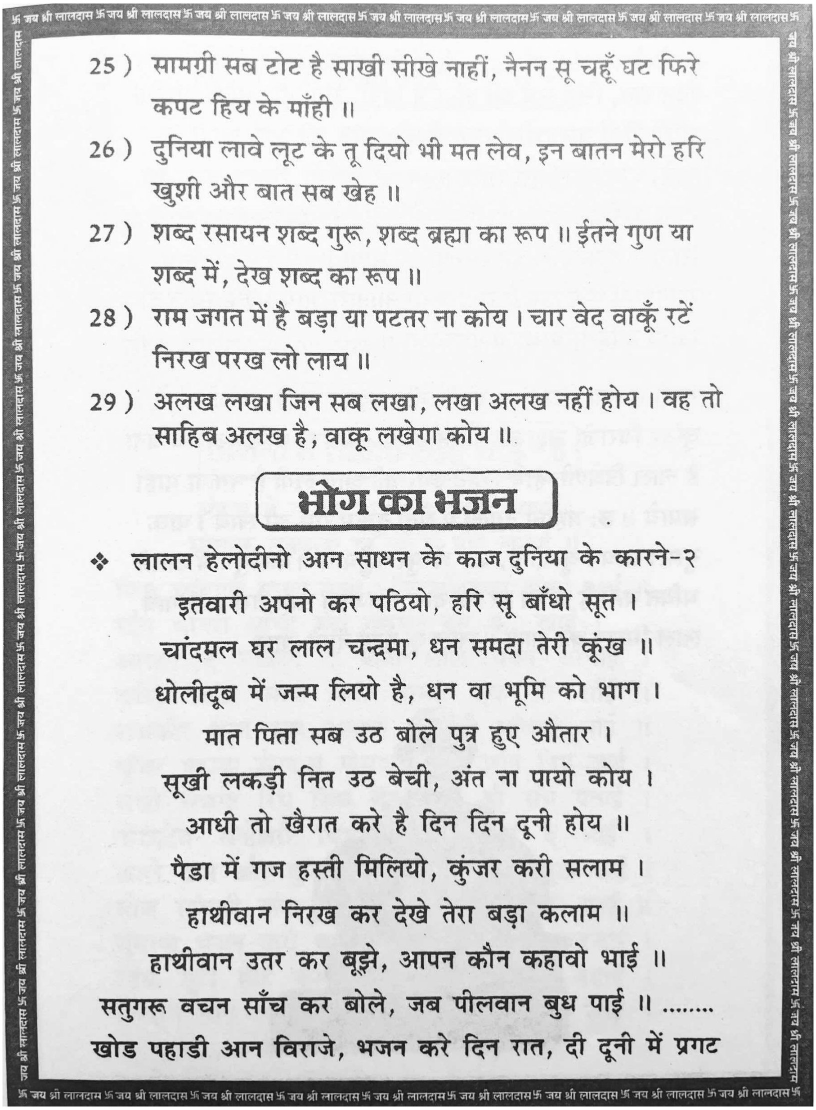

25 ) सामग्री सब टोट है साखी सीखे नाहीं, नैनन सू चहूँ घट फिरे कपट हिय के माँही ॥

26 ) दुनिया लावे लूट के तू दियो भी मत लेव, इन बातन मेरो हरि खुशी और बात सब खेह ॥

27 ) शब्द रसायन शब्द गुरू, शब्द ब्रह्मा का रूप ॥ ईतने गुण या शब्द में, देख शब्द का रूप ॥

28 ) राम जगत में है बड़ा या पटतर ना कोय । चार वेद वाकूँ रटें निरख परख लो लाय ॥

29 ) अलख लखा जिन सब लखा, लखा अलख नहीं होय । वह तो साहिब अलख है, वाकू लखेगा कोय ॥

## भोग का भजन

❖ लालन हेलोदीनो आन साधन के काज दुनिया के कारने-२

इतवारी अपनो कर पठियो, हरि सू बाँधो सूत ।

चांदमल घर लाल चन्द्रमा, धन समदा तेरी कूंख ॥

धोलीदूब में जन्म लियो है, धन वा भूमि को भाग ।

मात पिता सब उठ बोले पुत्र हुए औतार ।

सूखी लकड़ी नित उठ बेची, अंत ना पायो कोय ।

आधी तो खैरात करे है दिन दिन दूनी होय ॥

पैडा में गज हस्ती मिलियो, कुंजर करी सलाम ।

हाथीवान निरख कर देखे तेरा बड़ा कलाम ॥

हाथीवान उतर कर बूझे, आपन कौन कहावो भाई ॥

सतुगरू वचन साँच कर बोले, जब पीलवान बुध पाई ॥ ........

खोड पहाडी आन विराजे, भजन करे दिन रात, दी दूनी में प्रगट

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

भयो है शक्कर बाँटे हाथ सिहं शिला में आसन माँढो, भजन करें दिन रात, सिंह सर्प की शंक न मानी, सब जुग आयो हाथ ॥

बांधोली में यज्ञ रची है, ख्वावे बूरा भात, जो आवे जाही कू पावे, धन्य लाल तेरी साख ॥

दाना पानी अब बना है, लाल टोडी को धाये । कुल का लोग सिद्ध जब कहिये, तब रसगण कू आयो ॥

रसगण में एक झुपडी छाई कुँवर औतारी आये । एक म्यान दो खाँडा कहिये, बाँधोली पहुँचाओ ॥

सखी सरूपा रिध सिध बीबी, वीर पहाडा गाजी । बाँधोली मे कुँवर बिराजे, जश की नौबत बाजी ॥ मक्का मन्दिर अजब बना है लाल त्रिवेणी न्हाये । गांठ उमर की आय लगी है नगंला माही समाये ॥ छः महीना नगंला में बैठो हुकम राम को लावे । पाक गुसल साधन कू दीनी, जब शेरपुर पहुँचाये ॥ कलयुग मैं आछी भक्ति करी है साँचो हर को दास । अजमत साध तेरा जश गावे, लाल मिलन की आश ॥ लाल कू हेलो दीनो आज...

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

## दास भजन निस्तारो सतगुरू - 5

दास भजन निस्तारो-२

या जन्म हमारो सुधारो सतगुरू जन्म हमारो सुधारो
माटी की भीत पवन को गारो कोल कियो है करारो ।
पानी सू नर पैदा कियो अन्न को कियो सहारो
सहित कबीले बली कहावें कुँवर कुतब पहाडों ।
सोज सावँली सरूपा बरकत । अविचल राज तिहारो ।
दास भजन निस्तारो....

## अंगना में खेलत सातू भाई - 6

अंगना में खेलत सातू भाई लाल भक्त ।
सतगुरू सतवादी हर जी सू प्रीत लगाई ॥

पिता चांदमल समदा माता । जिनकी कूख औतरे आई ॥
माय भौगरी साँची बंदी क्ससन कर कर खाई । .....
आसल दे गोकल दे माता लाल भक्त बरपाई ।
चाँदो लाडो मानो माता सुमरो एक ही साँई ।
राजकौर जिन राज कमायो । सखी साँवली माई ॥
कुँवर पहाडा शेरदास गोसदास हरी दर्शन नित जाई ।
सखी सरूपा रिध सिध बीबी संग ही संग पठाई ।
नोरंगदेय संतोशरी चिमनी मुक्त नवल दे बाई ।
काले दास और कुँवर फतेदास संतन के सुख दाई ।
सोज सांवली कंवर कोरानी सुफल कूख की जाई ॥
सुमरण भजन करो साहिब को सकल पाप मुचजाई ।
सीख सुणे सोई फल पावे हरजी के होवे बडाई ।
प्रेमदास जन शरण लालकी रामचरण बली जाई ।
अंगना में खेलै सातो भाई

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

**भजन**

लाज सरूपा जी ने राखी भक्तन की।
दीन कमायो बीबी दुनिया त्यागी अपनो राम कियो है राजी।।
कलयुग केडो दीन कमायो दिल की दुरमत भागी।।
सतशील हिरदा में जाके । चन्द सूरज तेरो साकी।।
आठ पहर हरजी के आगे। यह बुद्ध है बाबा की।।
लाल प्रभू मोहे सतगुरू मिले है बिनती सुनो मलखाँ की।।

**भजन**

लाल मेरो धनमाल लाल दातार है
लाल ही को पूँजी पल्लो। लाल साहुकार है।।
या दुनिया को लाल साधु। मोकु सिद्ध मुरार है।।
लाल ही को दीयो खाऊँ, लाल ही के दरश आऊँ।।
लाल के दरबार साधो, दूनी जय जय कार है।।
लाल के ही हाथ बात, राम ही के रहे साथ।।
लाल ही उतारे साधे, खेवा पहली पार है।।
आन देवन सू अनबन, साहिब सेती पार ही।।
हरीदास साध तेरो यश गावे। लाल के दरबार है।।

**भजन**

लाल को चिराग बाबा, देखो जी धर्मात्मा।।
राम के खंदाये आये, साधुन में सुख चैन लाये।।
सो कबीले बली कहाये, दुहलौत का गौत में।।
दादा तेरो चांदमल, पिता तेरो ओलियो।।
माता तेरी भौगरी। बैठी खिलावे गोद में ।।
सतजुग राज कियो, सरबस दान दियो ।।
आछी आछी जग्य दीनी। बाँदोली का खेत में।।
हरिदास साध, कुंबर तेरो जस गाये।।
मोज तो तुम्हारी पावे, ज्ञान ध्यान पावे साधुन का साथ में।
गाओ रे लाल जिरंजन प्यारो हर कू जपे सो हर कू प्यारो।।

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

## भजन

जन का बन्धन काट मुरारी...2
मोहे विषम ज्वर आन सतावे होवे अनत दुखः भारी ।।
ये बन्धन कटबे को नाँही ओषद बिना तुम्हारी ।।
तुम ही वैध धन्वन्तर मेरे तुम ही मूल पंसारी ।।
तुम्हे छोड कहां जाऊ मेरे सतगुरू कौन है दिखाऊ नाडी
मंकारी के सुत राखन कू प्रण कियौ तैने भारी ।
द्रोपदी को तैने चीर बढायो । जासू सकल सभा पचहारी ।।
नाम लेत गोविन्द को गाणिका। बैठ विमान सिधारी।।
लाल प्रभू मोहे सतगुरू मिले हैं लीजो खबर हमारी ।।
गाओ रे लाल निरन्जन प्यारो हर कू जपे सो हर कू प्यारो।।

## भजन

मेरा मुझमे कुछ नाही जी। जो कुछ है सो सांई।।
शीश साहिब को बाशा कहिये। श्री नारायण नैनन माही।।
नाशा माही निरंजन कहिये। सिरोमणी श्रवण माही।।
कंठ माही श्री कृष्ण विराजै। तन मे तीरथ भाई।।
इन्द्रिन में दीनानाथ बसत है। मन में मालक भाई।।
चित माही चितानन्द विराजे। रोम रोम रघूराई।।
छगन मे दर्शन की आशा। पग परिक्रम्मा धाई ।।
कर जोड हरिदास बिनती करेजी। प्रभू लाल के चरणन मांही।।
गावो रे लाल निरंजन प्यारो हरकू जपे सो हर कू प्यारो।।

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

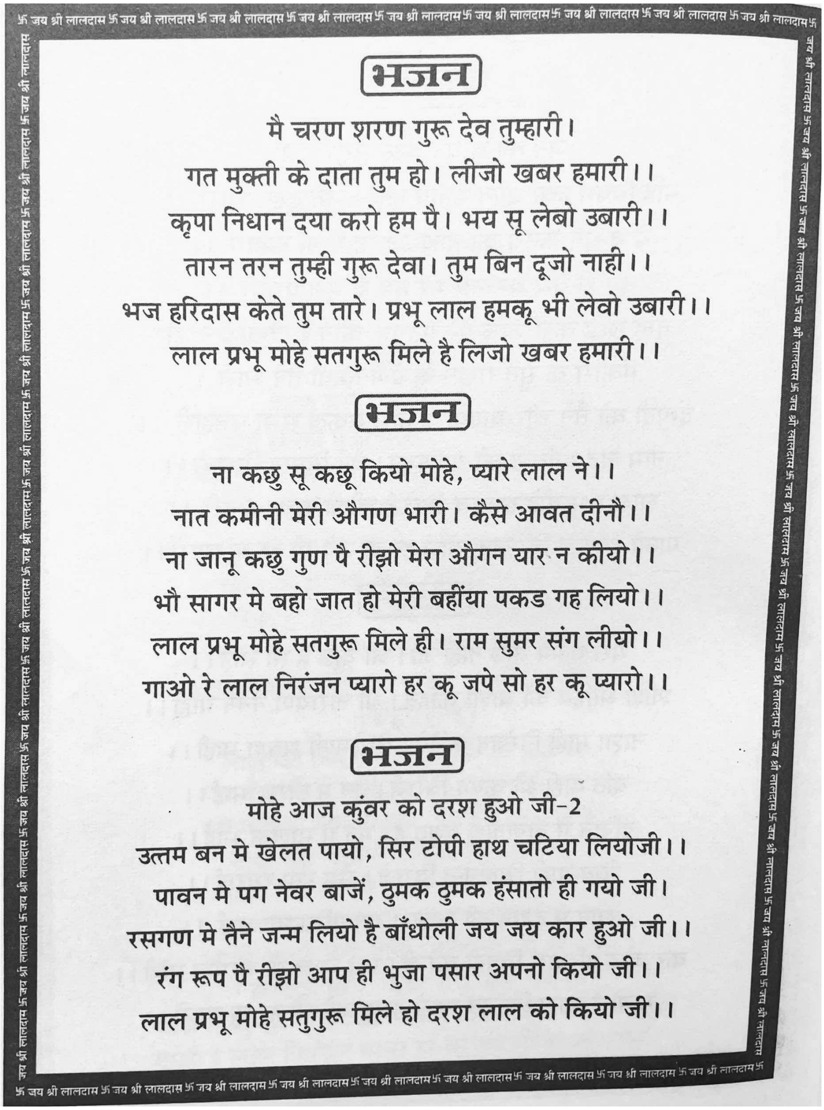

**भजन**

मै चरण शरण गुरू देव तुम्हारी।
गत मुक्ती के दाता तुम हो। लीजो खबर हमारी।।
कृपा निधान दया करो हम पै। भय सू लेबो उबारी।।
तारन तरन तुम्ही गुरू देवा। तुम बिन दूजो नाही।।
भज हरिदास केते तुम तारे। प्रभू लाल हमकू भी लेवो उबारी।।
लाल प्रभू मोहे सतगुरू मिले है लिजो खबर हमारी।।

**भजन**

ना कछु सू कछू कियो मोहे, प्यारे लाल ने।।
नात कमीनी मेरी औगण भारी। कैसे आवत दीनौ।।
ना जानू कछु गुण पै रीझो मेरा औगन यार न कीयो।।
भौ सागर मे बहो जात हो मेरी बहींया पकड गह लियो।।
लाल प्रभू मोहे सतगुरू मिले ही। राम सुमर संग लीयो।।
गाओ रे लाल निरंजन प्यारो हर कू जपे सो हर कू प्यारो।।

**भजन**

मोहे आज कुंवर को दरश हुओ जी-2
उत्तम बन मे खेलत पायो, सिर टोपी हाथ चटिया लियोजी।।
पावन मे पग नेवर बाजें, ठुमक ठुमक हंसातो ही गयो जी।
रसगण मे तैने जन्म लियो है बाँधोली जय जय कार हुओ जी।।
रंग रूप पै रीझो आप ही भुजा पसार अपनो कियो जी।।
लाल प्रभू मोहे सतुगुरू मिले हो दरश लाल को कियो जी।।

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

## हम सब मिलकर बाबा

हम सब मिलकर आए बाबा तेरे दरबार
भरदो झोली सबकी तेरे पूरण भण्डार

होवे जब संध्याकाल, निर्मल होके तत्काल
अपना मस्तक झुकाएं, करके तेरा ख्याल
तेरे दर पर आके बैठे, सारा परिवार ... हम सब... ॥१॥

लेके दिल में फरियाद, करते हम तुमको याद
जब हो मुश्किल की घड़ियां, मांगे तुमसे इमदाद
सब से बढ़कर ऊँचा जग में तेरा आधार ... हम सब... ॥२॥

चाहे दिन हो विपरित, होवे तुमसे ही प्रीत
सच्ची श्रद्धा से गाये तेरी, भक्ति के गीत
होवे सबका बाबा जी तेरे चरणों में प्यार ... हम सब... ॥३॥

तू है सब जग का वाली, करता सबकी रखवाली
हम है रंग-रंग के पौधे, तू है हम सबका माली
'पाथिक' बगीचा है ये तेरा सुन्दर संसार ... हम सब... ॥४॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

## ॥ श्री लालदास की वन्दना ॥

जगती रहे लालदास, ज्योति तेरी जगती रहे ॥ टेक ॥
जगती रहे बाबा लाल, ज्योति तेरी जगती रहे ।
किसने बाबा तेरा भवन बनाया-२
किसने हरिगुण गाया, ज्योति तेरी जगती रहे ॥१॥
भक्तों ने बाबा तेरा भवन बनाया-२
साधन हरिगुण गाया, ज्योति तेरी जगती रहे ॥२॥
किसने बाबा तेरे चादर चढ़ाई-२
किसने ज्योति जगाई, ज्योति तेरी जगती रहे ॥३॥
भक्तों ने बाबा तेरी चादर चढ़ाई-२
संतन ज्योति जगाई, ज्योति तेरी जगती रहे ॥४॥
लाल ध्वजा और सवा रूपैया-२
भक्तों ने भेंट चढ़ाया, ज्योति तेरी जगती रहे ॥५॥
बूरा भात का थाल सजाया-२
प्रेभ से भोग लगाया, ज्योति तेरी जगती रहे ॥६॥
दूर-दूर से यात्री आवें-२
हर्ष-हर्ष यश गाया, ज्योति तेरी जगती रहे ॥७॥
बाबा की महिमा है भारी-२
सबने दर्शन पाया, ज्योति तेरी जगती रहे ॥८॥
सब की करी कामना पूरी-२
मन वांछित फल पाया, ज्योति तेरी जगती रहे ॥९॥
हरिभक्तन जब ध्यान लगालैं-२
अनहद सबद सुनाया, ज्योति तेरी जगती रहे ॥१०॥
भक्त मण्डल बाबा तेरे दर आया,
चरणनन शीश नवाया, ज्योति तेरी जगती रहे ॥६॥ ॥११॥
जगती रहे लालदास ज्योति तेरी जगती रहे ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

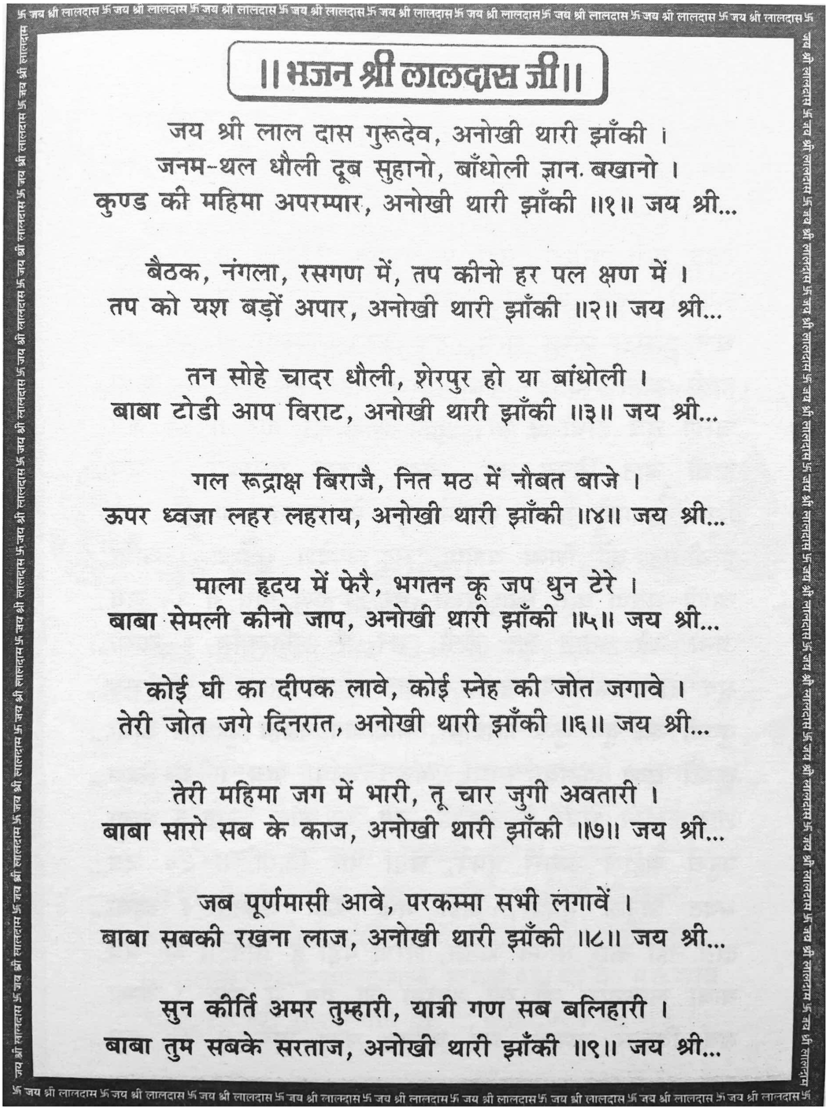

## ॥ भजन श्री लालदास जी ॥

जय श्री लाल दास गुरूदेव, अनोखी थारी झाँकी ।
जनम-थल धौली दूब सुहानो, बाँधोली ज्ञान बखानो ।
कुण्ड की महिमा अपरम्पार, अनोखी थारी झाँकी ॥१॥ जय श्री...

बैठक, नंगला, रसगण में, तप कीनो हर पल क्षण में ।
तप को यश बड़ों अपार, अनोखी थारी झाँकी ॥२॥ जय श्री...

तन सोहे चादर धौली, शेरपुर हो या बांधोली ।
बाबा टोडी आप विराट, अनोखी थारी झाँकी ॥३॥ जय श्री...

गल रूद्राक्ष बिराजै, नित मठ में नौबत बाजे ।
ऊपर ध्वजा लहर लहराय, अनोखी थारी झाँकी ॥४॥ जय श्री...

माला हृदय में फेरै, भगतन कू जप धुन टेरे ।
बाबा सेमली कीनो जाप, अनोखी थारी झाँकी ॥५॥ जय श्री...

कोई घी का दीपक लावे, कोई स्नेह की जोत जगावे ।
तेरी जोत जगे दिनरात, अनोखी थारी झाँकी ॥६॥ जय श्री...

तेरी महिमा जग में भारी, तू चार जुगी अवतारी ।
बाबा सारो सब के काज, अनोखी थारी झाँकी ॥७॥ जय श्री...

जब पूर्णमासी आवे, परकम्मा सभी लगावें ।
बाबा सबकी रखना लाज, अनोखी थारी झाँकी ॥८॥ जय श्री...

सुन कीर्ति अमर तुम्हारी, यात्री गण सब बलिहारी ।
बाबा तुम सबके सरताज, अनोखी थारी झाँकी ॥९॥ जय श्री...

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

# श्री बाबा लालदास आरती

ॐ जय बाबा लालदास, ॐ जय बाबा लालदास ।
सब दुख हारी संकट टारी, आया तेरे पास ॥ ॐ जय...
बाल्यावस्था में वन जा कर, तुमने तपकीना । बाबा...
देवन करी परीक्षा, वहां पै बजाके मृदुवीना ॥ ॐ जय...
लकड़ी बेचन अलवर जाकर, करत पेट उद्धार । बाबा...
चले भरोटा ऊंचा सरसे, देव करत जयकार ॥ ॐ जय...
हाथी मस्त सामने आया, मच रहा हाहाकार । बाबा...
चरण छुवे हाथी ने तेरे, झुका शीश हर बार ॥ ॐ जय...
हाथी वान विनय कर, जोरत कहता बारम्बार । जय...
शिष्य बनाओ बाबा, मुझको तुम मेरे करतार ॥ ॐ जय...
हाथीवान को शिष्य बनाया, सद् उपदेश सुनाया । बाबा...
वाणी श्रवण करी चित देकर, तेरे ही गुण गाय ॥ ॐ जय...
अन्धे को आंखे तुम दीनी, मन में अतिहर्षाय । बाबा...
ध्रुव दर्शन करवाये बाबा, चरणन शीश नवाय ॥ ॐ जय...
कुष्टी का तुम कुष्ट मिटाया, जय जय करता ज़ाय । बाबा...
कुष्टी द्रव्य लुटाया सगरा, कंचन काया पाय ॥ ॐ जय...
शाह जहान भवंर में अटकी, तुम को याद किया । बाबा...
पहुंचे जहाज उबारी तुमने, बेडा पार किया ॥ ॐ जय...
भक्त अनेक तुम्हारे, कहां तक करूं बखान । बाबा...
दास नहीं कछु भक्ति जानत, शरण पड़ा है आन ॥ ॐ जय...
बाबा लालदास जी की आरती जो मन से गावे । बाबा...
सर्व विकार नशावै, मन वाँछित फल पावै ॥ ॐ जय...

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

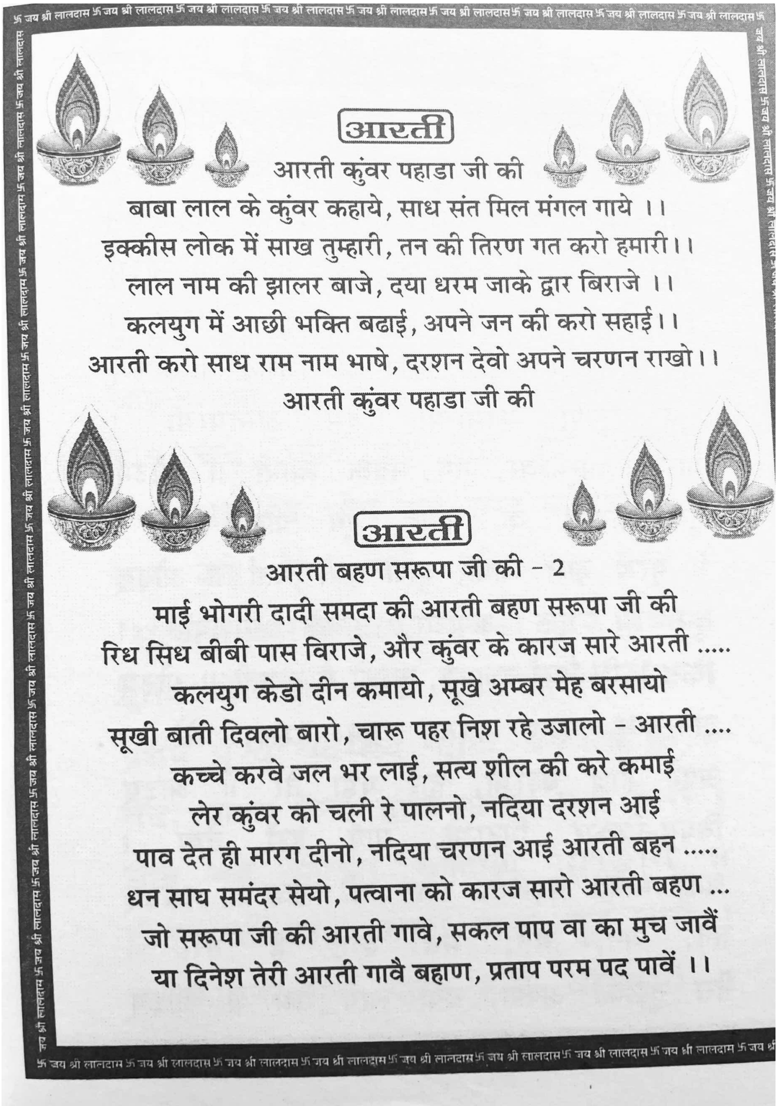

आरती

आरती कुंवर पहाडा जी की
बाबा लाल के कुंवर कहाये, साध संत मिल मंगल गाये ।।
इक्कीस लोक में साख तुम्हारी, तन की तिरण गत करो हमारी।।
लाल नाम की झालर बाजे, दया धरम जाके द्वार बिराजे ।।
कलयुग में आछी भक्ति बढाई, अपने जन की करो सहाई।।
आरती करो साध राम नाम भाषे, दरशन देवो अपने चरणन राखो।।
आरती कुंवर पहाडा जी की

आरती

आरती बहण सरूपा जी की – 2
माई भोगरी दादी समदा की आरती बहण सरूपा जी की
रिध सिध बीबी पास विराजे, और कुंवर के कारज सारे आरती .....
कलयुग केडो दीन कमायो, सूखे अम्बर मेह बरसायो
सूखी बाती दिवलो बारो, चारू पहर निश रहे उजालो – आरती ....
कच्चे करवे जल भर लाई, सत्य शील की करे कमाई
लेर कुंवर को चली रे पालनो, नदिया दरशन आई
पाव देत ही मारग दीनो, नदिया चरणन आई आरती बहन .....
धन साघ समंदर सेयो, पत्वाना को कारज सारो आरती बहण ...
जो सरूपा जी की आरती गावे, सकल पाप वा का मुच जावैं
या दिनेश तेरी आरती गावै बहाण, प्रताप परम पद पावें ।।

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

## ॐ जय जगदीश हरे

ओ३म् जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥ ओ३म्
जो ध्यावे फल पावै, दुःख बिनसे मनका ।
सुख सम्पति घर आवै, कष्ट मिटे तनका ॥ ओ३म्
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ओ३म्
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ओ३म्
तुम करुणा के सागर, तुम पालन-कर्ता ।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ओ३म्
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमती ॥ ओ३म्
दीन-बन्धु दुःख हरता, तुम रक्षक मेरे ।
अपने हाथ बढ़ाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ओ३म्
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥ ओ३म्
तन, मन, धन, सब कुछ है तेरा ।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ ओ३म्

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

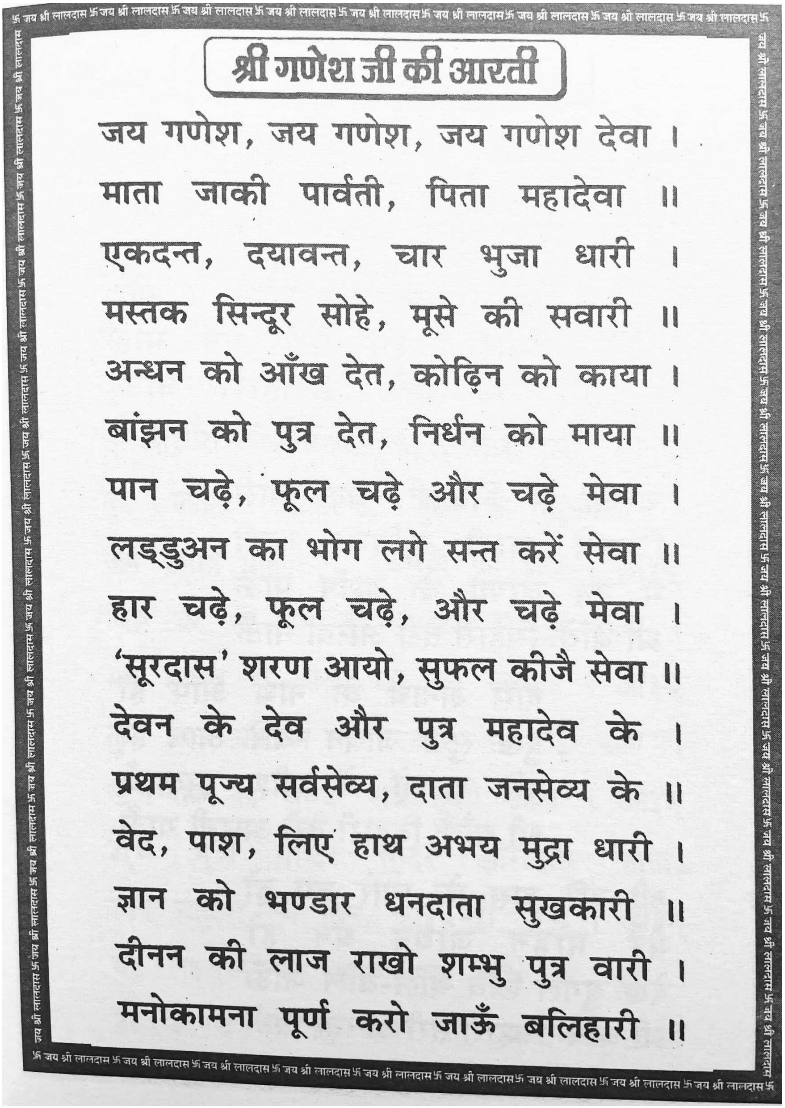

## श्री गणेश जी की आरती

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
एकदन्त, दयावन्त, चार भुजा धारी ।
मस्तक सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी ॥
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया ।
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥
पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा ।
लड्डुअन का भोग लगे सन्त करें सेवा ॥
हार चढ़े, फूल चढ़े, और चढ़े मेवा ।
'सूरदास' शरण आयो, सुफल कीजै सेवा ॥
देवन के देव और पुत्र महादेव के ।
प्रथम पूज्य सर्वसेव्य, दाता जनसेव्य के ॥
वेद, पाश, लिए हाथ अभय मुद्रा धारी ।
ज्ञान को भण्डार धनदाता सुखकारी ॥
दीनन की लाज राखो शम्भु पुत्र वारी ।
मनोकामना पूर्ण करो जाऊँ बलिहारी ॥

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

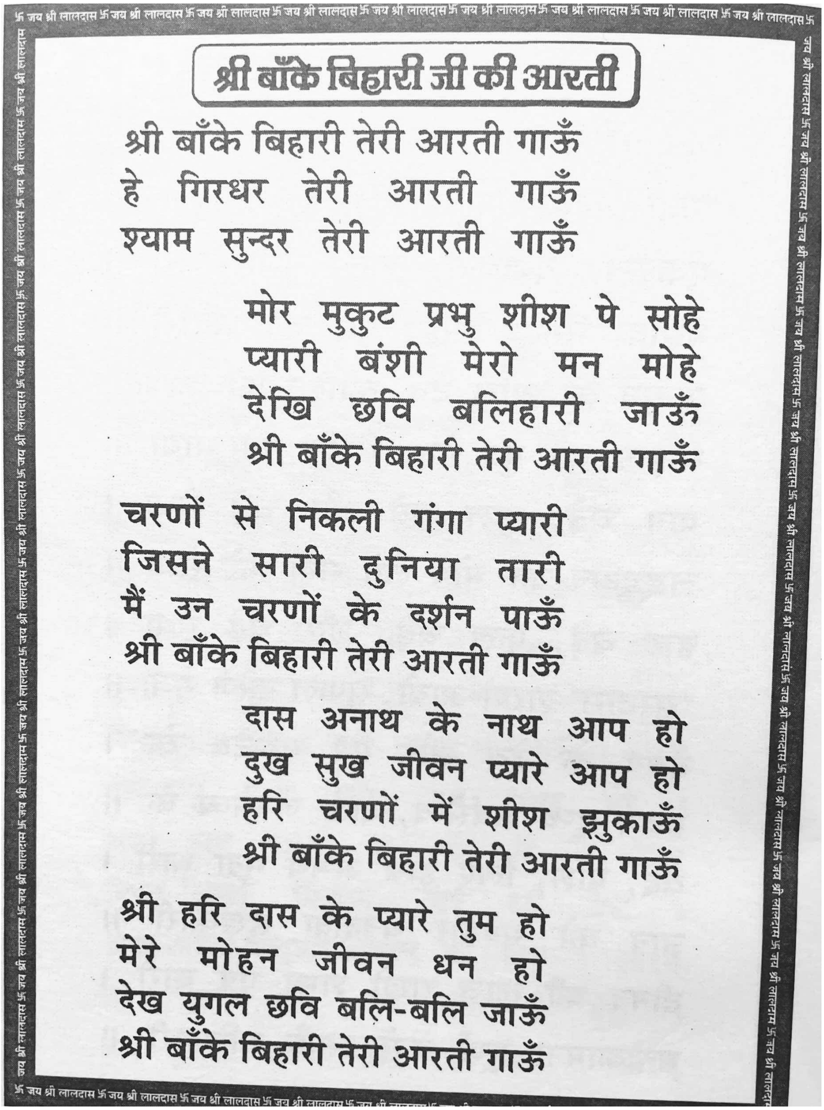

## श्री बाँके बिहारी जी की आरती

श्री बाँके बिहारी तेरी आरती गाऊँ
हे गिरधर तेरी आरती गाऊँ
श्याम सुन्दर तेरी आरती गाऊँ

मोर मुकुट प्रभु शीश पे सोहे
प्यारी बंशी मेरो मन मोहे
देखि छवि बलिहारी जाऊँ
श्री बाँके बिहारी तेरी आरती गाऊँ

चरणों से निकली गंगा प्यारी
जिसने सारी दुनिया तारी
मैं उन चरणों के दर्शन पाऊँ
श्री बाँके बिहारी तेरी आरती गाऊँ

दास अनाथ के नाथ आप हो
दुख सुख जीवन प्यारे आप हो
हरि चरणों में शीश झुकाऊँ
श्री बाँके बिहारी तेरी आरती गाऊँ

श्री हरि दास के प्यारे तुम हो
मेरे मोहन जीवन धन हो
देख युगल छवि बलि-बलि जाऊँ
श्री बाँके बिहारी तेरी आरती गाऊँ

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

## श्री लक्ष्मी जी की आरती

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता
तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु धाता । ओ३म्
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता ।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता । ओ३म्
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पति-दाता ।
जो कोई नर तुमको ध्यावत, ऋद्धि सिद्धि पाता । ओ३म्
तुम पाताल निवासिनी, तुम ही शुभदाता ।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता । ओ३म्
जिस घर में वास तुम्हारा, तहं सदगुण आता ।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता । ओ३म्
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता ।
खान-पान को वैभव, सब तुमसे आता । ओ३म्
शुभ गुण मन्दिर सुन्दर क्षीरोदधि जाता,
रतन चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता । ओ३म्
यह लक्ष्मीजी की आरती, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता । ओ३म्

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

## श्री पित्तरों जी की आरती

पितरों की नित आरती कीजै,
तन मन धन चरणों में लीजै ।
अपने कुल की रक्षा करते-2,
पुत्र पौत्रों के दुःख को हरते ।
पितरों की नित आरती कीजै ॥
स्वर्ग लोक में वास तुम्हारा,
सेवा करते देवता सारे ।
पितरों की नित आरती कीजै ॥
जिन पर आप खुशी हो जाओ,
उनके कारज सिद्ध बनाओ ।
पितरों की नित आरती कीजै ।
जो कोई शरण में आवे तुम्हारो,
जग में सुख पाता भारो ।
पितरों को नित आरती कीजै ॥
जो कोई नित पितरों की आरती गावे,
नर जीवन में सुख सम्पत्ति पावे ।
आरती पितरों की कीजै ।

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

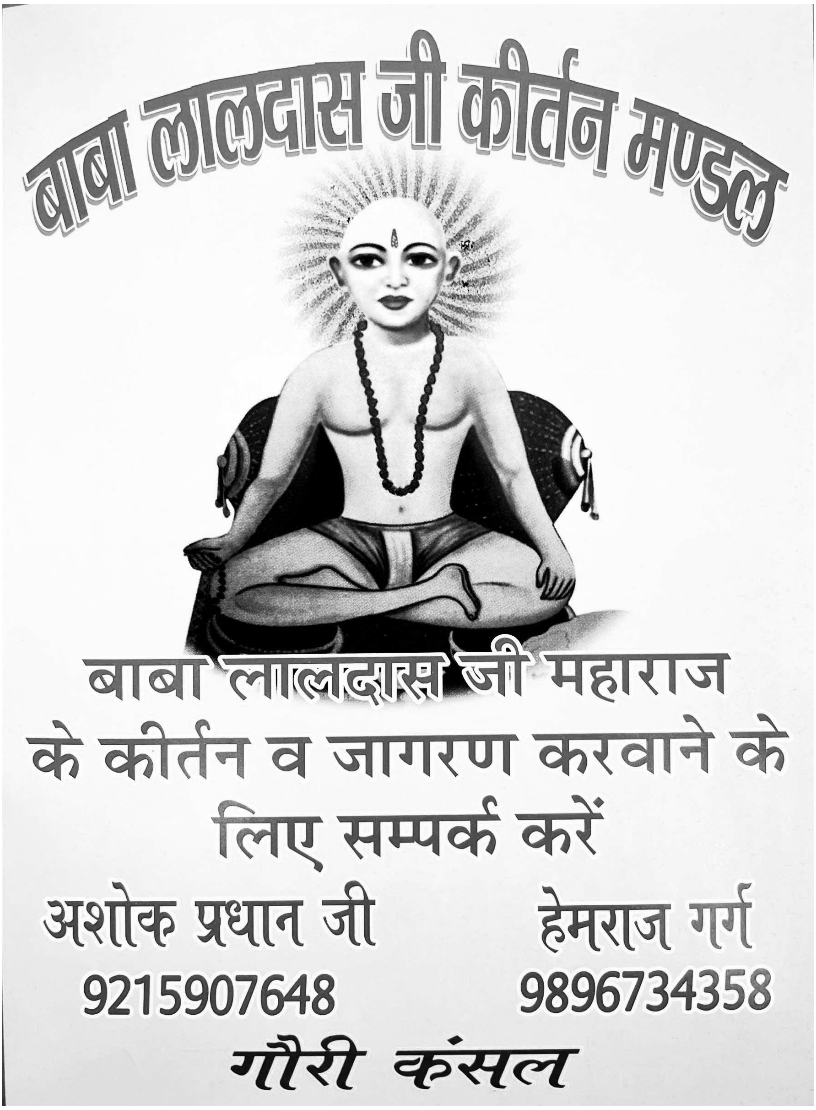


https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press

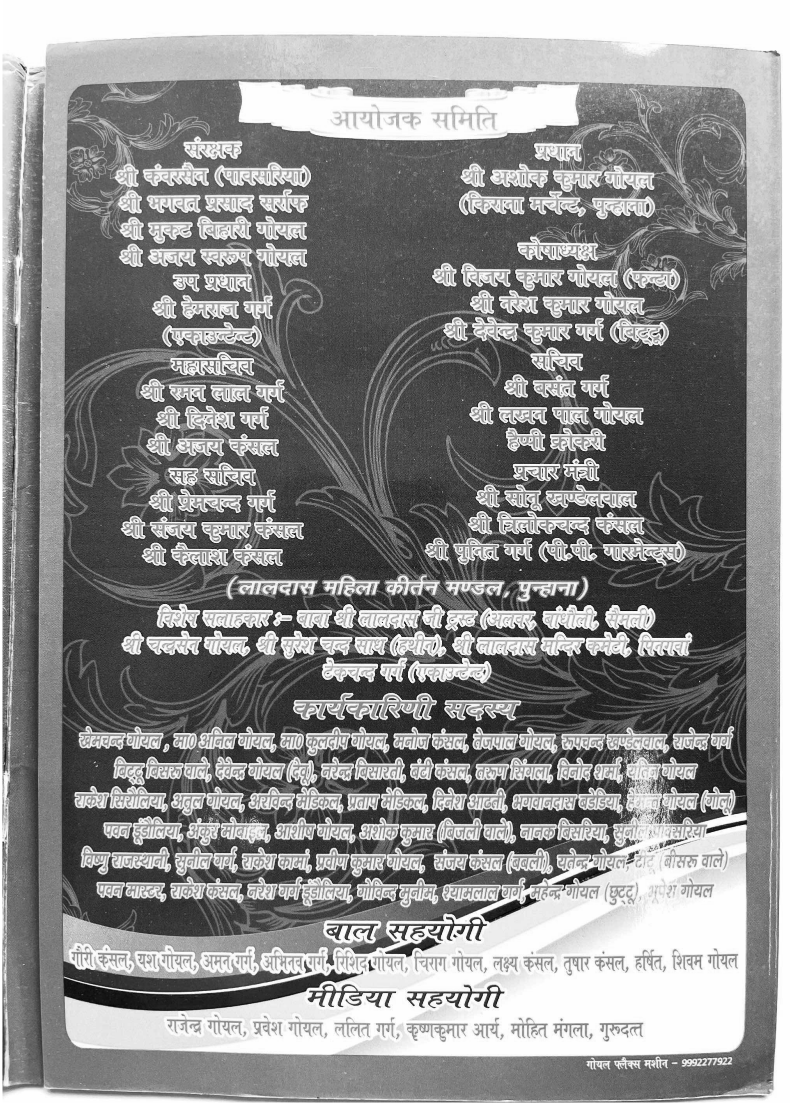

आयोजक समिति

संरक्षक
श्री कंवरसैन (पावसरिया)
श्री भगवत प्रसाद सर्राफ
श्री मुकट बिहारी गोयल
श्री अजय स्वरूप गोयल

उप प्रधान
श्री हेमराज गर्ग
(एकाउन्टेन्ट)

महासचिव
श्री रमन लाल गर्ग
श्री दिनेश गर्ग
श्री अजय कंसल

सह सचिव
श्री प्रेमचन्द गर्ग
श्री संजय कुमार कंसल
श्री कैलाश कंसल

प्रधान
श्री अशोक कुमार गोयल
(किराना मर्चेन्ट, पुन्हाना)

कोषाध्यक्ष
श्री विजय कुमार गोयल (फन्टा)
श्री नरेश कुमार गोयल
श्री देवेन्द्र कुमार गर्ग (बिट्टू)

सचिव
श्री बसंत गर्ग
श्री लखन पाल गोयल
हैप्पी क्रोकरी

प्रचार मंत्री
श्री सोनू खण्डेलवाल
श्री त्रिलोकचन्द कंसल
श्री पुनित गर्ग (पी.पी. गारमेन्ट्स)

(लालदास महिला कीर्तन मण्डल, पुन्हाना)

विशेष सलाहकार :– बाबा श्री लालदास जी ट्रस्ट (अलवर, बांधौली, सैमली)
श्री चन्द्रसेन गोयल, श्री सुरेश चन्द साध (हथीन), श्री लालदास मन्दिर कमेटी, पितगवां
टेकचन्द गर्ग (एकाउन्टेन्ट)

कार्यकारिणी सदस्य

खेमचन्द गोयल, मा0 अनिल गोयल, मा0 कुलदीप गोयल, मनोज कंसल, तेजपाल गोयल, रूपचन्द खण्डेलवाल, राजेन्द्र गर्ग
बिट्टू बिसरू वाले, देवेन्द्र गोयल (दिवू), नरेन्द्र बिसारती, बंटी कंसल, तरूण सिंगला, विनोद शर्मा, यतिन गोयल
राकेश सिरौलिया, अतुल गोयल, अरविन्द मेडिकल, प्रताप मेडिकल, दिनेश आढती, भगवानदास बडेडिया, हेमन्त गोयल (गोलू)
पवन डूंडौलिया, अंकुर मोबाइल, आशीष गोयल, अशोक कुमार (बिजली वाले), नानक बिसरिया, सुनील पावसरिया
विष्णु राजस्थानी, सुनील गर्ग, राकेश कामां, प्रवीण कुमार गोयल, संजय कंसल (बबली), यतेन्द्र गोयल, टीटू (बीसरू वाले)
पवन मास्टर, राकेश कंसल, नरेश गर्ग डूंडौलिया, गोविन्द मुनीम, श्यामलाल गर्ग, महेन्द्र गोयल (छुट्टू), भूपेश गोयल

बाल सहयोगी

गौरी कंसल, यश गोयल, अमन गर्ग, अभिनव गर्ग, रिशिद गोयल, चिराग गोयल, लक्ष्य कंसल, तुषार कंसल, हर्षित, शिवम गोयल

मीडिया सहयोगी

राजेन्द्र गोयल, प्रवेश गोयल, ललित गर्ग, कृष्णकुमार आर्य, मोहित मंगला, गुरुदत्त

गोयल फ्लैक्स मशीन – 9992277922

https://doi.org/10.1017/9781009423991.009 Published online by Cambridge University Press